PRGI No. GUJHIN/2011/39228

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM AHMEDABAD

वर्ष : 16
अंक : 041
दि. 10.06.2026,
बुधवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

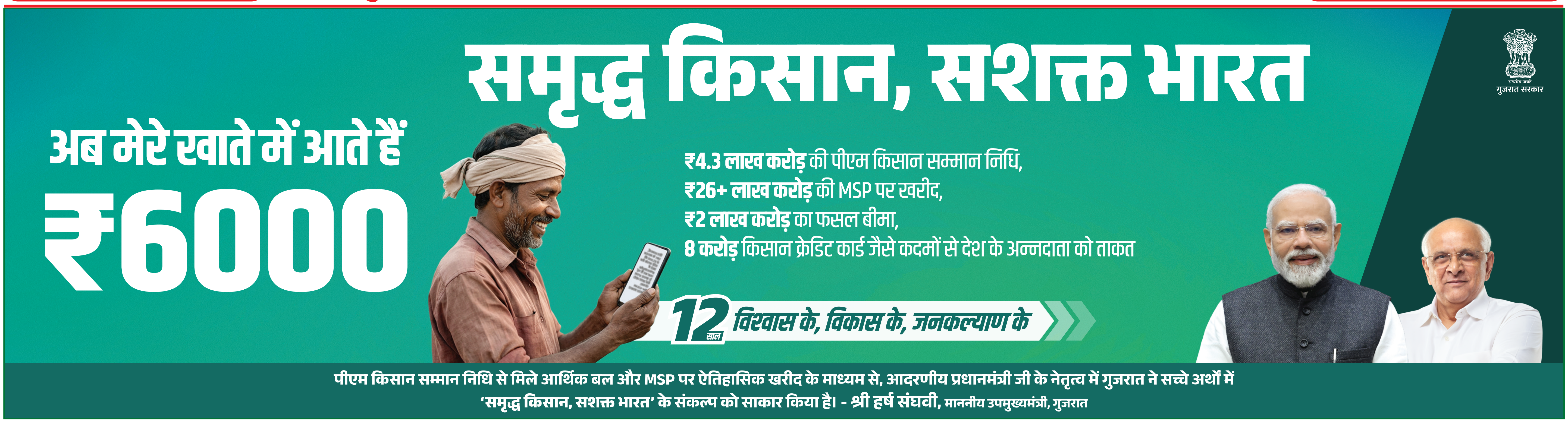

विकसित भारत के संकल्प को मिली नई गति, मोदी सरकार के 12 वर्ष पूरे होने पर उपलब्धियों का लेखा-जोखा

नई दिल्ली। केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के 12 वर्ष पूरे होने के अवसर पर भारतीय जनता पार्टी ने देशभर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर बीते वर्षों की उपलब्धियों को जनता के सामने रखा। इसी क्रम में राजधानी दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित एक विशेष कार्यक्रम में भाजपा अध्यक्ष नितिन नवीन ने मोदी सरकार के 12 वर्षों को विकास, विश्वास और जनकल्याण का स्वर्णिम काल बताते हुए कहा कि इस अवधि में भारत ने आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और वैश्विक स्तर पर अभूतपूर्व प्रगति दर्ज की है। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक से अधिक समय में देश ने निराशा और अनिश्चितता के दौर से निकलकर आत्मविश्वास, सुशासन और विकास की नई यात्रा शुरू की है, जिसके परिणाम आज पूरी दुनिया देख रही है।

इस अवसर पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, गृह मंत्री अमित शाह, केंद्रीय मंत्री जे.पी. नड्डा, धर्मेंद्र प्रधान, पीयूष गोयल और अश्विनी वैष्णव सहित अनेक वरिष्ठ नेता उपस्थित रहे। कार्यक्रम में सरकार की योजनाओं, उपलब्धियों और भविष्य की विकास यात्रा पर विस्तार से चर्चा की गई। भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत केवल आर्थिक रूप से मजबूत नहीं हुआ है, बल्कि वैश्विक मंच पर उसकी प्रतिष्ठा और प्रभाव भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है।

नितिन नवीन ने अपने संबोधन में कहा कि वर्ष 2014 से पहले देश में भ्रष्टाचार, नीति-गत अनिश्चितता और नेतृत्व संकट को लेकर व्यापक चर्चा होती थी। जनता के बीच व्यवस्था के प्रति विश्वास कम होता जा रहा था और विकास की गति अपेक्षित स्तर पर नहीं थी। ऐसे समय में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को एक नया विजन दिया और सुशासन, पारदर्शिता तथा विकास को शासन का केंद्र बनाया। उन्होंने कहा कि आज भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है और विकसित भारत का लक्ष्य केवल सरकार का सपना नहीं, बल्कि 140 करोड़ भारतीयों का सामूहिक संकल्प बन चुका है।

भाजपा अध्यक्ष ने सरकार की 12 प्रमुख उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि पिछले वर्षों में गरीबों, किसानों, महिलाओं, युवाओं और वंचित वर्गों के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए व्यापक प्रयास किए गए हैं। उन्होंने कहा कि विभिन्न सरकारी योजनाओं और आर्थिक सुधारों के परिणामस्वरूप 25 करोड़ से अधिक लोग गरीबी से बाहर

आए हैं। यह उपलब्धि दुनिया के किसी भी बड़े लोकतंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण उदाहरण मानी जा सकती है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से चार करोड़ से अधिक पक्के घरों का निर्माण किया गया, जिससे करोड़ों परिवारों को सुरक्षित आवास उपलब्ध हुआ। आवास केवल एक भवन नहीं, बल्कि सम्मानजनक जीवन का आधार होता है और सरकार ने इसी सोच के साथ गरीब परिवारों के सिर पर छत उपलब्ध कराने का कार्य किया है। इसके साथ ही आयुष्मान भारत योजना के तहत 60 करोड़ से अधिक लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा का लाभ मिला है, जिससे गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों को महंगे इलाज की चिंता से राहत मिली है।

महिलाओं के सशक्तिकरण को सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल बताते हुए नितिन नवीन ने कहा कि स्वयं सहायता समूहों और विभिन्न योजनाओं के माध्यम से तीन करोड़ से अधिक महिलाओं को 'लखपति दीदी' के रूप में आर्थिक रूप से सक्षम बनाया गया है। इससे महिलाओं की आय में वृद्धि हुई है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी नई ताकत मिली है। उन्होंने कहा कि महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का यह अभियान सामाजिक परिवर्तन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

रोजगार और स्वरोजगार के क्षेत्र में भी सरकार की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के माध्यम से 57 करोड़ से अधिक ऋण वितरित किए गए हैं। इससे छोटे व्यवसायों, स्टार्टअप्स और स्वरोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिला है। लाखों युवाओं और छोटे उद्यमियों ने इस योजना के माध्यम से अपने व्यवसाय शुरू किए और आर्थिक आत्मनिर्भरता की दिशा में कदम बढ़ाया।

स्वच्छता अभियान का उल्लेख करते हुए भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि देशभर में 12 करोड़ से अधिक शौचालयों का निर्माण किया गया, जिससे खुले में शौच की समस्या में उल्लेखनीय कमी आई है। उन्होंने कहा कि यह केवल स्वच्छता का कार्यक्रम नहीं था, बल्कि महिलाओं की गरिमा और स्वास्थ्य से जुड़ा एक सामाजिक आंदोलन भी था।

आर्थिक क्षेत्र की उपलब्धियों पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भारत ने निर्यात के क्षेत्र में नए रिकॉर्ड स्थापित किए हैं। रक्षा उत्पादन और रक्षा निर्यात में देश ने उल्लेखनीय प्रगति की है तथा आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत रक्षा क्षेत्र में स्वदेशीकरण को नई गति मिली है। उन्होंने बताया कि देश का कुल निर्यात रिकॉर्ड स्तर तक पहुंचा है, जो वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की बढ़ती भागीदारी का संकेत है। डिजिटल क्रांति को मोदी सरकार की सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक बताते हुए नितिन नवीन ने कहा कि आज भारत डिजिटल भुगतान के क्षेत्र में दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल है। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) ने वित्तीय लेनदेन को आसान, सुरक्षित और पारदर्शी बनाया है। उन्होंने कहा कि यूपीआई लेनदेन में हजारों गुना वृद्धि हुई है और करोड़ों लोग डिजिटल अर्थव्यवस्था से जुड़ चुके हैं। इससे न केवल वित्तीय समावेशन बढ़ा है, बल्कि नकदी आधारित अर्थव्यवस्था पर निर्भरता भी कम हुई है।

बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय प्रगति का दावा करते हुए उन्होंने कहा कि देश में आधुनिक रेल नेटवर्क, एक्सप्रेसवे, हवाई अड्डों और बंदरगाहों का तेजी से विस्तार किया गया है। वंदे भारत ट्रेनों और क्षेत्रीय रैपिड ट्रांजिट सिस्टम जैसी परियोजनाओं ने यात्रा को अधिक तेज और सुविधाजनक बनाया है। सरकार का लक्ष्य देश के हर क्षेत्र को विकास की मुख्यधारा से जोड़ना है। राष्ट्रीय सुरक्षा के विषय पर बोलते हुए भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि सरकार ने आतंकवाद, उग्रवाद और नक्सलवाद के खिलाफ सख्त नीति अपनाई है। उन्होंने दावा किया कि देश नक्सलवाद की चुनौती से काफी हद तक बाहर निकल चुका है और सुरक्षा व्यवस्था पहले की तुलना में कहीं अधिक मजबूत हुई है। सीमाओं की सुरक्षा, रक्षा क्षमता में वृद्धि और आधुनिक सैन्य तकनीक के उपयोग को भी उन्होंने सरकार की महत्वपूर्ण उपलब्धियों में शामिल किया।

सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहरों के संरक्षण तथा विकास का उल्लेख करते हुए नितिन नवीन ने कहा कि देश अपनी प्राचीन विरासत पर गर्व करते हुए आधुनिक विकास की राह पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने अयोध्या में राम मंदिर निर्माण, उज्जैन में महाकाल लोक परियोजना और काशी विश्वनाथ धाम के पुनर्विकास जैसी परियोजनाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इन पहलों ने सांस्कृतिक चेतना को नई ऊर्जा प्रदान की है। साथ ही भारत की आध्यात्मिक परंपराओं को वैश्विक पहचान दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

उन्होंने कहा कि योग आज विश्व स्तर पर भारत की सांस्कृतिक पहचान बन चुका है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से भारत की प्राचीन परंपरा को दुनिया भर में सम्मान मिला है। इसी प्रकार गंगा आरती, आध्यात्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण ने देश की वैश्विक छवि को मजबूत किया है।

भाजपा अध्यक्ष ने अनुच्छेद 370 हटाने के फैसले को भी ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि इससे राष्ट्रीय एकता और अखंडता को मजबूती मिली है। उन्होंने कहा कि यह जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 'एक विधान, एक निशान और एक प्रधान' के संकल्प को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। अपने संबोधन के अंत में नितिन नवीन ने कहा कि पिछले 12 वर्षों की उपलब्धियां केवल सरकार की सफलता की कहानी नहीं हैं, बल्कि देश के करोड़ों नागरिकों की आकांक्षाओं और सहभागिता का परिणाम हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में और अधिक तेज गति से आगे बढ़ेगा तथा आने वाले वर्षों में वैश्विक मंच पर और अधिक प्रभावशाली भूमिका निभाएगा। उनके अनुसार विकसित भारत का लक्ष्य अब केवल एक सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र का साझा संकल्प बन चुका है।

बदलती वैश्विक चुनौतियों के बीच मजबूत हुई भारत की परमाणु प्रतिरोधक क्षमता

नई दिल्ली। वैश्विक सामरिक परिदृश्य में तेजी से हो रहे बदलावों के बीच भारत की परमाणु प्रतिरोधक क्षमता को लेकर नई चर्चाएं शुरू हो गई हैं। अंतरराष्ट्रीय शांति अनुसंधान संस्थान की ताजा रिपोर्ट में संकेत दिया गया है कि भारत अपने परमाणु प्रतिरोधक ढांचे को अधिक प्रभावी और आधुनिक बनाने की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है। रिपोर्ट के अनुसार जनवरी 2026 तक भारत के पास लगभग 190 परमाणु हथियारों का भंडार था, जो पिछले वर्षों की तुलना में कुछ अधिक माना जा रहा है। इसके साथ ही भारत ने अपनी सामरिक तैयारियों को मजबूत करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण परिचालन बदलाव भी किए हैं, जिन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

विशेषज्ञों के अनुसार भारत लंबे समय से न्यूनतम लेकिन विश्वसनीय परमाणु प्रतिरोधक क्षमता की नीति पर काम करता रहा है। देश का परमाणु कार्यक्रम आक्रामक विस्तार के बजाय प्रतिरोधक संतुलन और राष्ट्रीय सुरक्षा सुनिश्चित करने पर केंद्रित रहा है। इसी रणनीति के तहत भारत ने अपनी परमाणु क्षमताओं को आधुनिक तकनीक, बेहतर तैनाती व्यवस्था और बहुस्तरीय सुरक्षा ढांचे के माध्यम से अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में कदम बढ़ाए हैं। रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि भारत ने पहली बार कुछ परमाणु हथियारों को परिचालन स्तर पर ऐसी स्थिति में रखा है, जहां आवश्यकता पड़ने पर उनकी त्वरित तैनाती संभव हो सके। पहले भारत की नीति के अनुसार परमाणु हथियारों और उन्हें ले जाने वाली मिसाइल प्रणालियों को सामान्य परिस्थितियों में अलग-अलग रखा जाता था तथा युद्धकालीन या गंभीर सुरक्षा परिस्थितियों में ही उन्हें जोड़ा जाता था। अब कुछ हथियारों की तैनाती व्यवस्था में परिवर्तन किए जाने की चर्चा ने सामरिक विशेषज्ञों का ध्यान आकर्षित किया है।

विशेषज्ञों का मानना है कि यह बदलाव केवल हथियारों की संख्या बढ़ाने का संकेत नहीं है, बल्कि तेजी से बदलते सुरक्षा वातावरण के अनुरूप परिचालन क्षमता को बेहतर बनाने का प्रयास है। आधुनिक युद्ध और सुरक्षा चुनौतियों को देखते हुए कई परमाणु शक्ति संपन्न देश अपनी प्रतिरोधक क्षमता को अधिक त्वरित और विश्वसनीय बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं। भारत भी इसी व्यापक रणनीतिक सोच के अंतर्गत अपनी क्षमताओं का विकास कर रहा है।

भारत की परमाणु नीति का सबसे महत्वपूर्ण आधार आज भी "नो फर्स्ट यूज" का सिद्धांत है। इस नीति के अनुसार भारत किसी भी देश के खिलाफ पहले परमाणु हथियार का प्रयोग नहीं करेगा। भारत ने हमेशा स्पष्ट किया है कि उसके परमाणु हथियार केवल प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने और किसी संभावित परमाणु हमले की स्थिति में जवाबी कार्रवाई के लिए हैं। यही कारण है कि भारत की परमाणु नीति को दुनिया में अपेक्षाकृत जिम्मेदार और संतुलित दृष्टिकोण के रूप में देखा जाता है। रक्षा विशेषज्ञों के अनुसार भारत की परमाणु रणनीति का मुख्य उद्देश्य विरोधी देशों को यह संदेश देना है कि किसी भी प्रकार के परमाणु हमले का प्रभावी जवाब दिया जाएगा। इसी सिद्धांत को विश्वसनीय न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता कहा जाता है। भारत हथियारों की अंधाधुंध दौड़ में शामिल होने के बजाय अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप सीमित लेकिन प्रभावशाली क्षमता बनाए रखने की नीति पर कायम है।

रिपोर्ट में भारत के परमाणु ट्रायड को भी विशेष रूप से उल्लेखित किया गया है। परमाणु ट्रायड का अर्थ है कि किसी देश के पास परमाणु हथियारों को हवा, जमीन और समुद्र—तीनों माध्यमों से प्रक्षेपित करने की क्षमता हो। भारत पिछले कुछ वर्षों में इस दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति कर चुका है। लंबी दूरी की मिसाइलें, रणनीतिक बमवर्षक क्षमता और परमाणु हथियार ले जाने में सक्षम पनडुब्बियां मिलकर भारत की प्रतिरोधक शक्ति को और मजबूत बनाती हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि समुद्री आधारित परमाणु क्षमता किसी भी देश की सुरक्षा व्यवस्था का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा होती है। यदि किसी संघर्ष की स्थिति में जमीन या वायु आधारित प्रणालियां प्रभावित हो जाएं, तब भी समुद्र में तैनात परमाणु पनडुब्बियां जवाबी क्षमता बनाए रखती हैं। यही कारण है कि समुद्री प्रतिरोधक क्षमता को आधुनिक परमाणु रणनीति का सबसे विश्वसनीय घटक माना जाता है।

रिपोर्ट में यह भी संकेत दिया गया है कि भारत मिसाइल प्रणालियों को अधिक सुरक्षित और त्वरित उपयोग के लिए आधुनिक तकनीकों से लैस कर रहा है। इससे परिचालन तैयारियों में सुधार होगा और आवश्यकता पड़ने पर प्रतिक्रिया समय कम किया जा सकेगा। हालांकि भारत ने हमेशा यह स्पष्ट किया है कि उसकी सैन्य और परमाणु रणनीतियां पूरी तरह रक्षात्मक प्रकृति की हैं।

वैश्विक स्तर पर देखा जाए तो परमाणु हथियारों का मुद्दा एक बार फिर अंतरराष्ट्रीय बहस के केंद्र में है। कई देशों के बीच बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, क्षेत्रीय संघर्ष और सुरक्षा संबंधी चिंताओं ने परमाणु प्रतिरोधक क्षमता के महत्व को बढ़ा दिया है। ऐसे समय में विभिन्न देश अपनी सुरक्षा रणनीतियों की समीक्षा कर रहे हैं और अपने रक्षा ढांचे को आधुनिक बनाने में निवेश कर रहे हैं। रिपोर्ट में दक्षिण एशिया की सामरिक स्थिति का भी उल्लेख किया गया है। इसके अनुसार जनवरी 2026 तक भारत के पास अनुमानित रूप से 190 परमाणु हथियार थे, जबकि पाकिस्तान के पास लगभग 170 परमाणु हथियार होने का अनुमान व्यक्त किया गया है। रिपोर्ट यह भी संकेत देती है कि पाकिस्तान नई हथियार प्रणालियों के विकास पर काम कर रहा है और आने वाले वर्षों में उसके परमाणु भंडार में वृद्धि हो सकती है।

संपादकीय

पहले आम को राहत

आज वैश्विक आर्थिक परिदृश्य तेजी से अनिश्चितता के भंवर में फंसता नजर आ रहा है। अमेरिका-इस्राइल व ईरान के बीच जारी संघर्ष से उपजा भू-राजनीतिक तनाव, ऊर्जा की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि, बाधित व्यापार मार्ग से प्रभावित आपूर्ति श्रृंखला भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये नई चुनौतियां खड़ी कर रही है। ऐसे में देश के लिये प्राथमिकता केवल विकास की गति बनाये रखना ही नहीं होनी चाहिए। सरकार का दायित्व है कि आम लोगों को महंगाई की मार से बचाने के लिये व्यावहारिक कदम भी उठाये। दरअसल, भारत के सामने केवल मध्यपूर्व में जारी संघर्ष से उपजा संकट ही नहीं है, बल्कि अंदरूनी मोर्चे पर भी कई तरह की दिक्कतें पैदा हो रही हैं। हाल ही में केंद्रीय बैंक ने देश में मानसून में कमी की आशंका जतायी है। ऐसा अल-नीनो के प्रभाव के चलते पैदा होने वाले विषम हालातों के चलते कहा गया है। जिसके चलते आगामी कुछ माह में खाद्य पदार्थों की कीमतों में वृद्धि की आशंका भी व्यक्त की जा रही है। ऐसे में महंगाई में कमी आने की सूरत नजर नहीं आती। देश के कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि फिलहाल सरकार की प्राथमिकता आर्थिक विकास में वृद्धि ही है। जिसके चलते आशंका जतायी जा रही है कि इससे नागरिकों पर महंगाई का दबाव बढ़ सकता है। निस्संदेह, अर्थव्यवस्था में सुधार होना चाहिए, लेकिन वक्त की नजाकत को देखते हुए आम आदमी को महंगाई से राहत देना बेहद जरूरी है। अन्यथा आम लोगों का जीवन-यापन और अधिक कष्टकारी भी हो सकता है। यही वजह है कि कुछ अर्थशास्त्री मानते हैं कि सरकार आर्थिक विकास की प्राथमिकताओं व महंगाई नियंत्रण के प्रयासों के बीच संतुलन साधने का प्रयास करे। लेकिन पिछले दिनों पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में कई बार की वृद्धि के बाद व्यावसायिक व घरेलू एलपीजी के दामों का बढ़ना, लोगों की चिंता बढ़ाने वाला है। जाहिर बात है कि इस वृद्धि से पहले ही महंगाई से जूझते लोगों का बजट और गड़बड़ा जाएगा।

निस्संदेह, पेट्रोलियम पदार्थों की कीमत में वृद्धि के बाद कुकिंग गैस के दामों की वृद्धि आम आदमी का बजट बिगाड़ने वाली है। फलतः लोगों की क्रय शक्ति कम हो रही है। वहीं आर्थिकी में मुद्रास्फीति का दबाव बढ़ने की आशंका है। इस उथल-पुथल भरे वैश्विक परिदृश्य में कुछ कारक देश की अर्थव्यवस्था को संबल देने वाले भी हैं। देश में घरेलू मांग मजबूत है, संरचनात्मक विकास में निवेश जारी है। वहीं तेजी से बढ़ती डिजिटल अर्थव्यवस्था हमारी ताकत भी है। जिससे हम एक सीमा तक वैश्विक चुनौतियों का मुकाबला कर सकते हैं। लेकिन एक कड़वी सच्चाई यह भी है कि कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें हमारे आयात बिलों पर दबाव बढ़ा रही हैं। जिसका प्रभाव रुपये पर भी बढ़ते दबाव के रूप में सामने आया है। हालांकि, विदेशी संस्थागत निवेशकों को लुभाने के लिये केंद्रीय बैंक प्रयासरत है, लेकिन बाजार के पटरी पर आने में कुछ वक्त अवश्य लगेगा। आरबीआई का विश्वास है कि निवेश नियमों में ढील से पूंजी के प्रवाह को प्रोत्साहन मिलेगा। केंद्रीय बैंक की प्राथमिकताओं में आर्थिक स्थिरता कायम करना, रुपये को संबल देना और देश की वित्तीय प्रणाली में पर्याप्त तरलता बनाये रखना भी है। बैंक की कोशिश है कि विकास को प्रभावित किए बिना ही आर्थिक स्थिरता लाने का प्रयास हो। निस्संदेह, नीति-नियंताओं के सामने आर्थिक विकास को गति देने के साथ मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना भी प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके लिये दोनों में संतुलन बनाने की जरूरत है। हम विकास और रोजगार को संरक्षण देते हुए महंगाई को नियंत्रित करने का प्रयास करें। जिसके लिये राजकोषीय विवेक, कमजोर वर्ग के लोगों को संबल तथा संरचनात्मक सुधार प्राथमिकता हों। तभी आर्थिक विकास और महंगाई में संतुलन बनाने में सफलता मिल सकती है। इसके लिये सरकार को अतिरिक्त कदम उठाने होंगे। वह महसूस करे कि आम आदमी की जेब पर महंगाई दबाव बनाने लगी है। जिससे अर्थव्यवस्था का प्रभावित होना लाजमी है। जिसके चलते केंद्रीय बैंक ने देश की आर्थिक वृद्धि दर में न केवल कमी की है बल्कि खुदरा महंगाई दर में वृद्धि के भी संकेत दिए हैं। विश्वास करें कि सरकार मौजूदा संकट से मुकाबले हेतु विस्तृत व्यावहारिक कदम उठाएगी।

Great Nicobar Project के जरिये Modi ने चला बड़ा Masterstroke
Indian Ocean के बीचोंबीच होगा भारत का सबसे बड़ा सैन्य किला

> हम आपको याद दिला दें कि केंद्र की मोदी सरकार ने पिछले वर्ष जिस हरित क्षेत्र हवाई अड्डे को मंजूरी दी थी, वह अगले पांच वर्षों में तैयार होने की उम्मीद है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह हवाई अड्डा भारतीय नौसेना के संचालन नियंत्रण में रहेगा।

मोदी सरकार ने हिंद महासागर में ऐसा दांव चला है, जिसने चीन की सबसे बड़ी रणनीतिक चिंता बढ़ा दी है। ग्रेट निकोबार में बनने वाला भारत का नया सैन्य और आर्थिक हब अब दुश्मनों के लिए खुली चेतावनी बन चुका है। जिस समुद्री रास्ते से दुनिया का सबसे बड़ा तेल और व्यापार गुजरता है, वहां अब भारत अपनी ताकत का स्थायी पहरा बैठाने जा रहा है। साफ है कि मोदी सरकार हिंद महासागर में भारत को सिर्फ मजबूत नहीं, बल्कि सबसे प्रभावशाली ताकत बनाने की तैयारी में जुट चुकी है।हम आपको याद दिला दें कि केंद्र सरकार ने पिछले वर्ष जिस हरित क्षेत्र हवाई अड्डे को मंजूरी दी थी, वह अगले पांच वर्षों में तैयार होने की उम्मीद है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह हवाई अड्डा भारतीय नौसेना के संचालन नियंत्रण में रहेगा। यानी यह केवल नागरिक उड़ानों का केंद्र नहीं होगा, बल्कि हिंद महासागर में भारत की सैन्य शक्ति का नया अग्रिम मोर्चा बनेगा। यह दोहरे उपयोग वाला हवाई अड्डा भारत की समुद्री निगरानी क्षमता, सैन्य पहुंच और त्वरित कार्रवाई की ताकत को कई गुना बढ़ा देगा।

हम आपको बता दें कि ग्रेट निकोबार की यह परियोजना चार बड़े स्तंभों पर आधारित है। इनमें अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट बंदरगाह, आधुनिक नगर, ऊर्जा संयंत्र और नौसैनिक हवाई अड्डा शामिल हैं। यह पूरा ढांचा भारत को उस समुद्री क्षेत्र में स्थायी उपस्थिति देगा, जहां से दुनिया के दो तिहाई तेल व्यापार और आधा कंटेनर यातायात गुजरता है। ग्रेट निकोबार केवल चालीस किलोमीटर दूर स्थित है उस सिक्स डिग्री चैनल से, जो अदन की खाड़ी से मलक्का जलडमरूमध्य तक फैले समुद्री व्यापार मार्ग का सबसे संवेदनशील हिस्सा माना जाता है।

यही वह इलाका है जहां चीन लगातार अपनी घुसपैठ बढ़ा रहा है। हिंद महासागर क्षेत्र में कई बाहरी ताकतें आर्थिक और सैन्य दबदबा बनाने में जुटी हैं। ऐसे में मोदी सरकार का यह कदम भारत को दक्षिण पूर्वी हिंद महासागर में निर्णायक बढ़त देगा। यानि अब भारत इस पूरे क्षेत्र में सुरक्षा साझेदार और संकट के समय सबसे पहले सहायता पहुंचाने वाली ताकत के रूप में उभरेगा।

रक्षा सूत्रों का साफ कहना है कि यह परियोजना तीस वर्ष पहले ही पूरी हो जानी चाहिए थी, लेकिन पिछली सरकारों की सुस्ती और दूरदृष्टि की कमी के कारण भारत ने बहुमूल्य समय गंवा दिया। अब मोदी सरकार उस रणनीतिक भूल को सुधार रही है। यह परियोजना भारत को अपने सैन्य संसाधनों की तेज आवाजाही, अग्रिम रसद आपूर्ति और समुद्री निगरानी में अभूतपूर्व क्षमता देगी।

विशेषज्ञों का मानना है कि ग्रेट निकोबार के आसपास समुद्र में विशाल हाइड्रोकार्बन भंडार भी हो सकते हैं। यदि ऐसा होता है तो यह परियोजना भारत की ऊर्जा सुरक्षा के लिए भी ऐतिहासिक साबित होगी। यानी यह केवल सैन्य ताकत का सवाल नहीं, बल्कि आर्थिक आत्मनिर्भरता का भी बड़ा आधार बनेगी। साथ ही मोदी सरकार ने उन आलोचनाओं को भी करारा जवाब दिया है, जिनमें इस परियोजना को केवल व्यावसायिक योजना बताकर बदनाम करने की कोशिश की जा रही थी। रक्षा सूत्रों ने साफ कहा है कि इसे केवल कारोबारी परियोजना कहना भौगोलिक अज्ञानता का प्रमाण है। यह परियोजना सामरिक, आर्थिक और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिहाज से भारत के भविष्य की धुरी है। सरकार ने यह भी स्पष्ट किया कि सभी परियोजनाएं पूरी पारदर्शिता और विधिवत ठेका प्रक्रिया के तहत संचालित की जा रही हैं।

हम आपको बता दें कि परियोजना के विभिन्न हिस्सों पर तेजी से काम चल रहा है। कंटेनर बंदरगाह के लिए सार्वजनिक निजी भागीदारी मूल्यांकन प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। नगर परियोजना पर व्यय वित्त समिति की बैठक हो चुकी है, जबकि द्रवीकृत प्राकृतिक गैस आधारित ऊर्जा संयंत्र की विस्तृत परियोजना रिपोर्ट तैयार कर ली गई है। इससे स्पष्ट है कि मोदी सरकार केवल घोषणाएं नहीं कर रही, बल्कि जमीन पर तेजी से अमल भी कर रही है। इसके साथ ही पर्यावरण को लेकर उठे सवालों पर भी सरकार ने तथ्यात्मक जवाब दिया है। पर्यावरण प्रभाव आकलन के अनुसार पूरे द्वीप के केवल 166.1 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को विकास के लिए चिन्हित किया गया है, जबकि 81.74 प्रतिशत क्षेत्र राष्ट्रीय उद्यान, जैवमंडल आरक्षित क्षेत्र, वन और जनजातीय संरक्षण क्षेत्रों के रूप में सुरक्षित रहेगा। वन क्षेत्र के उपयोग में भी आधे से अधिक हिस्से को हरित क्षेत्र के रूप में सुरक्षित रखा जाएगा, जहां पेड़ों की कटाई नहीं होगी।

इसके साथ ही वन्यजीवों, प्रवाल भित्तियों और मैंग्रोव संरक्षण के लिए तीस वर्षों में दो हजार दो सौ बीस करोड़ रुपये से अधिक का विशेष संरक्षण कार्यक्रम भी तैयार किया गया है। लेदरबैक कछुए, निकोबार मेगापोड और मगरमच्छों के संरक्षण पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।

इस तरह स्पष्ट है कि ग्रेट निकोबार परियोजना मोदी सरकार का केवल विकास अभियान नहीं, बल्कि भारत की समुद्री शक्ति का नया शंखनाद है। यह वह मास्टरस्ट्रोक है जो आने वाले दशकों में हिंद महासागर की रणनीतिक तस्वीर बदल सकता है। भारत अब अपने समुद्री हितों की रक्षा केवल तटों से नहीं करेगा, बल्कि समुद्र के बीचोंबीच अपनी निर्णायक उपस्थिति दर्ज कराएगा।

प्रेरणा

जब जिंदगी ने दरवाज़ा बंद किया, तब किस्मत ने खिड़की खोल दी

दुनिया में हर व्यक्ति सफलता प्राप्त करना चाहता है, लेकिन बहुत कम लोग यह समझते हैं कि सफलता और असफलता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जो व्यक्ति असफलता का सामना करने का साहस रखता है, वही अंततः बड़ी उपलब्धियों तक पहुंचता है। इतिहास में अनेक ऐसे उदाहरण मिलते हैं जहां लोगों ने अपने जीवन की सबसे बड़ी हार को ही अपनी सबसे बड़ी जीत का आधार बना लिया। स्टीव जॉब्स का जीवन भी इसी सत्य का जीवंत प्रमाण है। उनका सफर केवल एक सफल उद्यमी बनने की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस व्यक्ति की यात्रा है जिसने टूटने के बाद खुद को दोबारा बनाया और दुनिया को नई दिशा दी। स्टीव जॉब्स का जन्म साधारण परिस्थितियों में हुआ था। जन्म के बाद उन्हें गोद दे दिया गया और उनका पालन-पोषण एक सामान्य परिवार में हुआ। बचपन से ही उनमें कुछ अलग करने की ललक थी। वे चीजों को केवल देखने में विश्वास नहीं करते थे, बल्कि उन्हें समझना और बेहतर बनाना चाहते थे। तकनीक और इलेक्ट्रॉनिक्स के प्रति उनकी रुचि ने उन्हें कम उम्र में ही प्रयोगों की दुनिया से जोड़ दिया। उनकी यही जिज्ञासा आगे चलकर उनकी सबसे बड़ी ताकत बनी। युवावस्था में उनकी मुलाकात स्टीव वॉज़नियाक से हुई। दोनों की सोच मिलती-जुलती थी और दोनों तकनीक के क्षेत्र में कुछ नया करना चाहते थे। उन्होंने एक छोटे से गैराज में काम शुरू किया। उस समय शायद ही किसी ने सोचा होगा कि यह साधारण-सा गैराज भविष्य में तकनीकी क्रांति का केंद्र बन जाएगा। सीमित साधनों और बड़े सपनों के साथ उन्होंने एप्पल कंपनी की नींव रखी। उनका उद्देश्य केवल कंप्यूटर बनाना नहीं था, बल्कि ऐसी तकनीक विकसित करना था जो आम लोगों के जीवन को आसान और बेहतर बना सके। उनकी मेहनत, दूरदर्शिता और नवाचार के कारण एप्पल तेजी से आगे बढ़ने लगी। कंपनी ने ऐसे उत्पाद बनाए जिन्होंने तकनीक को आम लोगों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कुछ ही वर्षों में एप्पल एक बड़ी कंपनी बन गई। हजारों लोग वहां काम करने लगे और उसका मूल्य अरबों डॉलर तक पहुंच गया। स्टीव जॉब्स को युवा प्रतिभा और आधुनिक तकनीकी युग के प्रतीक के रूप में देखा जाने लगा। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि सफलता ने उनके कदमों में स्थायी निवास बना लिया है। लेकिन जीवन का नियम है कि वह किसी को भी हमेशा एक जैसी परिस्थितियां नहीं देता। जिस कंपनी को उन्होंने अपने सपनों, मेहनत और समर्पण से बनाया था, उसी कंपनी के भीतर उनके विचारों को लेकर मतभेद बढ़ने लगे। बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स और उनके बीच कई मुद्दों पर असहमति उत्पन्न हुई। अंततः स्थिति इतनी गंभीर हो गई कि वर्ष 1985 में उन्हें एप्पल से बाहर कर दिया गया। यह घटना उनके जीवन की सबसे दर्दनाक घटनाओं में से एक थी।

जिस व्यक्ति ने अपनी पूरी युवा उम्र एक संस्था को समर्पित कर दी हो, उसके लिए उसी संस्था से अलग कर दिया जाना किसी गहरे आघात से कम नहीं होता। स्टीव जॉब्स को भी यही अनुभव हुआ। वे मानसिक रूप से टूट गए। कई महीनों तक वे गहरे अवसाद और निराशा में रहे। उन्हें लगने लगा कि उनका सबसे बड़ा सपना उनसे छिन गया है। दुनिया उन्हें असफल मानने लगी थी और उनके आलोचक यह समझने लगे थे कि उनका अध्याय समाप्त हो चुका है। लेकिन जीवन में वास्तविक अंतर परिस्थितियां नहीं, बल्कि उनके प्रति हमारा दृष्टिकोण पैदा करता है। कुछ समय बाद स्टीव जॉब्स ने स्वयं को संभाला। उन्होंने महसूस किया कि एक कंपनी उनसे दूर हो सकती है, लेकिन उनकी प्रतिभा, अनुभव और कल्पनाशक्ति को कोई नहीं छीन सकता। उन्होंने यह तय किया कि वे अपनी कहानी को यहीं समाप्त नहीं होने देंगे। यही निर्णय उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। उन्होंने नेक्स्ट नामक एक नई कंपनी की स्थापना की। यह कंपनी उन्नत कंप्यूटर तकनीकों पर काम कर रही थी। भले ही शुरुआती वर्षों में उसे व्यापक व्यावसायिक सफलता नहीं मिली, लेकिन उसके द्वारा विकसित तकनीकों ने भविष्य के लिए महत्वपूर्ण आधार तैयार किया। इसी दौरान उन्होंने पिक्सर नामक कंपनी में भी अपनी ऊर्जा लगाई। उस समय एनीमेशन की दुनिया में कंप्यूटर तकनीक का उपयोग सीमित था, लेकिन जॉब्स ने इसमें छिपी संभावनाओं को पहचान लिया।

पिक्सर ने जल्द ही दुनिया को चौंका दिया। कंपनी ने "टॉय स्टोरी" नामक पहली पूर्ण लंबाई वाली कंप्यूटर एनीमेटेड फिल्म का निर्माण किया। यह फिल्म न केवल व्यावसायिक रूप से सफल रही, बल्कि इसने मनोरंजन उद्योग का भविष्य भी बदल दिया। पिक्सर एक वैश्विक पहचान बन गई और स्टीव जॉब्स फिर से सफलता के केंद्र में आ गए। यह साबित हो चुका था कि प्रतिभा किसी एक कंपनी या पद की मोहताज नहीं होती।

इसी बीच एप्पल लगातार कठिनाइयों का सामना कर रही थी। कंपनी बाजार में अपनी पहचान खोने लगी थी और आर्थिक संकट गहराता जा रहा था। आखिरकार एप्पल को महसूस हुआ कि जिस व्यक्ति को कभी बाहर का रास्ता दिखाया गया था, वही उसकी सबसे बड़ी जरूरत है। वर्ष 1997 में एप्पल ने नेक्स्ट कंपनी का अधिग्रहण किया और इसके साथ ही स्टीव जॉब्स की कंपनी में वापसी हुई। यह वापसी केवल एक औपचारिक घटना नहीं थी। यह एक ऐसे नेता की वापसी थी जिसके पास भविष्य को देखने की अद्भुत क्षमता थी। उन्होंने लौटते ही कंपनी की रणनीति में व्यापक बदलाव किए। उन्होंने गुणवत्ता, सरलता और नवाचार को केंद्र में रखा। उनके नेतृत्व में एप्पल ने ऐसे उत्पाद विकसित किए जिन्होंने पूरी दुनिया को प्रभावित किया। आईमैक, आईपॉड, आईफोन और बाद में अन्य उत्पादों ने तकनीकी उद्योग की दिशा बदल दी। आईफोन के आगमन ने मोबाइल फोन की परिभाषा ही बदल दी। यह केवल संचार का साधन नहीं रहा, बल्कि आधुनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया। संगीत सुनने, इंटरनेट उपयोग करने, तस्वीरें लेने और दुनिया से जुड़े रहने का तरीका बदल गया। एप्पल फिर से सफलता के शिखर पर पहुंच गई और स्टीव जॉब्स को आधुनिक युग के सबसे प्रभावशाली नवप्रवर्तकों में गिना जाने लगा। अपने जीवन के अनुभवों के बारे में बात करते हुए स्टीव जॉब्स ने एक बार कहा था कि एप्पल से निकाला जाना उनके जीवन की सबसे अच्छी घटनाओं में से एक साबित हुआ। उनके अनुसार, सफलता का बोझ हटने के बाद उन्हें फिर से एक शुरुआती व्यक्ति की तरह सोचने और नए प्रयोग करने का अवसर मिला। यदि वह घटना नहीं होती, तो शायद उनके जीवन की कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां कभी जन्म ही नहीं लेतीं।

पूर्व प्रधानमंत्री HD Deve Gowda ने आलेख लिख कर बताया PM Modi की सफलता का राज

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री एचडी देवेगौड़ा ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व, कार्यशैली और राजनीतिक यात्रा पर अपने विचार रखते हुए कहा है कि मोदी की सबसे बड़ी विशेषता उनका आत्मचिंतनशील स्वभाव है। मोदी सरकार के 12 साल पूरे होने के अवसर पर लिखे गये अपने आलेख में देवेगौड़ा ने लिखा है कि नरेंद्र मोदी केवल लंबे समय तक पद पर बने रहने वाले नेता नहीं हैं, बल्कि वह ऐसे जननेता हैं जिन्होंने बदलते भारत की आकांक्षाओं, चुनौतियों और लोकतांत्रिक चेतना को समझते हुए स्वयं को समय के अनुरूप ढाला है। देवेगौड़ा लिखते हैं कि नरेंद्र मोदी अब भारत के सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाले लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित प्रधानमंत्री बन चुके हैं। इस उपलब्धि ने जवाहरलाल नेहरू का पुराना कीर्तिमान पीछे छोड़ दिया है। यह केवल एक व्यक्ति की राजनीतिक सफलता नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता और जीवंतता का प्रमाण भी है।

अपने आलेख में वह बताते हैं कि जब नेहरू देश के पहले प्रधानमंत्री बने थे, तब परिस्थितियां बिल्कुल अलग थीं। स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत, महात्मा गांधी का नैतिक प्रभाव और कांग्रेस का व्यापक प्रभुत्व उनके साथ था। उस समय विपक्ष बेहद कमजोर था और चुनावी प्रतिस्पर्धा सीमित थी। 1952 के पहले आम चुनाव में केवल कुछ ही दल मैदान में थे और मतदाताओं की संख्या भी अपेक्षाकृत कम थी।

इसके विपरीत नरेंद्र मोदी ने ऐसे दौर में राजनीति की जब देश का सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्वरूप पूरी तरह बदल चुका था। अब लोकतंत्र अधिक जागरूक, प्रश्न पूछने वाला और प्रतिस्पर्धी हो गया है। मोदी ने वर्ष 2014 में पहली बार और फिर 2024 में तीसरी बार प्रधानमंत्री पद प्राप्त किया। देवेगौड़ा के अनुसार यह उपलब्धि साधारण नहीं है, क्योंकि आज का मतदाता अधिक सजग और अपेक्षाओं से भरा हुआ है।

अपने आलेख में देवेगौड़ा इस बात पर भी जोर देते हैं कि पहले के प्रधानमंत्रियों को जो सामाजिक और राजनीतिक आधार सहज रूप से मिल जाता था, वह मोदी जैसे नेताओं को नहीं मिला। न तो वह किसी राजनीतिक वंश से आए और न ही उनके पास कोई पारिवारिक विरासत थी। इसके बावजूद उन्होंने अपनी मेहनत, संगठन क्षमता और जनता से सीधे संवाद के बल पर स्वयं को स्थापित किया।

देवेगौड़ा अपने अनुभव का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि उनका स्वयं का प्रधानमंत्री कार्यकाल बहुत छोटा रहा, इसलिए वह यह देखकर आश्चर्य करते हैं कि नरेंद्र मोदी लगातार लंबे समय तक जनता का विश्वास बनाए रखने में कैसे सफल रहे? उनके अनुसार इसका उत्तर मोदी की अद्भुत ऊर्जा, अनुशासन और निरंतर आत्ममंथन में छिपा है।

देवेगौड़ा के आलेख में नेहरू और मोदी के समय के बीच सामाजिक बदलावों की तुलना भी की गई है। देवेगौड़ा लिखते हैं कि नेहरू के समय मंत्रिमंडल में समाज के विभिन्न वर्गों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं था। उस दौर में ऊंची जातियों का वर्चस्व अधिक दिखाई देता था। इसके विपरीत मोदी के मंत्रिमंडल में पिछड़े वर्गों, अनुसूचित जातियों, अनुसूचित जनजातियों और महिलाओं की भागीदारी अधिक दिखाई देती है। इसे वह आधुनिक भारत की सामाजिक विविधता का प्रतिबिंब मानते हैं। महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने को लेकर भी देवेगौड़ा ने मोदी सरकार की सराहना की है। उनका कहना है कि संसद और राजनीति में महिलाओं को अधिक प्रतिनिधित्व देने की दिशा में जो प्रयास हुए हैं, वह भारत को अधिक समावेशी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं।

देवेगौड़ा के अनुसार आज का भारत नेहरू काल के भारत से बहुत अलग है। अब नागरिक अधिक शिक्षित, जागरूक और अधिकारों के प्रति सजग हैं। सामाजिक न्याय, पर्यावरण, महिला अधिकार और नागरिक अधिकार जैसे विषयों पर समाज में गहरी चर्चा होती है। ऐसे समय में शासन चलाना पहले की तुलना में कहीं अधिक कठिन हो गया है। अपने आलेख में वह विशेष रूप से यह भी कहते हैं कि आज के नेताओं को चौबीसों घंटे सोशल मीडिया और समाचार चैनलों की आलोचना का सामना करना पड़ता है। कभी कभी आलोचना कठोर और व्यक्तिगत भी हो जाती है। फिर भी नरेंद्र मोदी लगातार जनता के बीच सक्रिय बने हुए हैं और आलोचनाओं से घबराने की बजाय स्वयं को जनता के सामने खुला रखते हैं।

अपने आलेख में देवेगौड़ा ने मोदी की विदेश नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक दृष्टि का भी उल्लेख किया। उन्होंने लिखा है कि मोदी ने भारत को तेजी से आगे बढ़ती अर्थव्यवस्था बनाने का प्रयास किया है। साथ ही राष्ट्रीय हितों की रक्षा के मामले में उन्होंने दृढ़ता दिखाई है। उन्होंने लिखा है कि सैन्य संघर्षों और सुरक्षा संबंधी चुनौतियों के समय उनका निर्णयात्मक नेतृत्व स्पष्ट रूप से सामने आया। पूर्व प्रधानमंत्री देवेगौड़ा यह भी कहते हैं कि मोदी केवल प्रशासनिक प्रमुख नहीं हैं, बल्कि वह जनता से भावनात्मक जुड़ाव रखने वाले नेता हैं। अपने रेडियो संवाद, तकनीक के उपयोग और सीधे संपर्क के माध्यम से उन्होंने समाज के हर वर्ग तक पहुंचने का प्रयास किया है।

अपने आलेख के अंत में देवेगौड़ा निष्कर्ष देते हैं कि नरेंद्र मोदी की सफलता का सबसे बड़ा कारण उनका आत्मचिंतनशील स्वभाव है। वह निरंतर स्वयं का मूल्यांकन करते रहते हैं, जनता की अपेक्षाओं को समझते हैं और बदलते समय के अनुसार अपने कार्य और दृष्टिकोण में सुधार करते रहते हैं। यही गुण उन्हें लंबे समय तक जनविश्वास प्राप्त कराने में सबसे अधिक सहायक बना है।

अभियान

सुगंध से सजती श्रद्धा: बाबा श्याम को इत्र अर्पित करने की अनोखी परंपरा और आस्था का रहस्य

भारतीय सनातन परंपरा में पूजा-पाठ केवल कर्मकांड नहीं, बल्कि भावनाओं, विश्वास और समर्पण की अभिव्यक्ति है। जब कोई भक्त अपने आराध्य के चरणों में फूल, फल, दीप, धूप या इत्र अर्पित करता है, तो वह वस्तुतः अपने मन की श्रद्धा और प्रेम को अर्पित कर रहा होता है। इसी प्रकार बाबा खाटू श्याम की भक्ति में भी कई ऐसी परंपराएं प्रचलित हैं, जो भक्तों की आस्था से गहराई से जुड़ी हुई हैं। इनमें से एक विशेष परंपरा है बाबा श्याम को इत्र अर्पित करने की। माना जाता है कि सुगंधित इत्र केवल खुशबू नहीं, बल्कि भक्त और भगवान के बीच भावनात्मक संबंध का माध्यम भी है। यही कारण है कि लाखों श्रद्धालु बाबा के दरबार में इत्र की अर्जी लगाते हैं और अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति की कामना करते हैं।

खाटू श्याम जी को कलियुग का सबसे जाग्रत देव माना जाता है। भक्तों का विश्वास है कि जो व्यक्ति सच्चे मन से बाबा का स्मरण करता है, उसकी पुकार अवश्य सुनी जाती है। यही वजह है कि उन्हें "हारे का सहारा" कहा जाता है। जीवन में जब सभी रास्ते बंद दिखाई देते हैं, तब भक्त बाबा श्याम के चरणों में पहुंचकर आशा और विश्वास का नया प्रकाश प्राप्त करते हैं। इसी अटूट श्रद्धा के कारण खाटू धाम में हर दिन हजारों श्रद्धालु अपनी समस्याओं, इच्छाओं और प्रार्थनाओं को लेकर आते हैं।

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार इत्र को पवित्रता, प्रेम, सकारात्मक ऊर्जा और आध्यात्मिक उन्नति का प्रतीक माना गया है। जिस प्रकार सुगंध वातावरण को मधुर और आनंदमय बना देती है, उसी प्रकार भक्ति की सुगंध भी जीवन को सुख, शांति और संतोष से भर देती है। इसलिए कई भक्त बाबा श्याम को इत्र अर्पित करके अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं। उनका विश्वास होता है कि सुगंध के माध्यम से उनकी प्रार्थना सीधे बाबा तक पहुंचती है और उनकी मनोकामनाएं शीघ्र पूर्ण होती हैं।

बाबा श्याम को इत्र अर्पित करने की परंपरा केवल एक साधारण धार्मिक क्रिया नहीं है, बल्कि इसके पीछे गहरा भाव छिपा हुआ है। विशेष रूप से तीन शीशियों वाले इत्र अर्पण की परंपरा भक्तों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। यह परंपरा श्रद्धा, विश्वास और कृतज्ञता के तीन महत्वपूर्ण भावों को दर्शाती है। जब कोई भक्त खाटू धाम पहुंचता है, तो वह अक्सर तीन छोटी शीशियां इत्र की लेकर आता है। प्रत्येक शीशी का अपना एक अलग आध्यात्मिक महत्व माना जाता है।

पहली शीशी उस प्रार्थना का प्रतीक होती है, जो भक्त बाबा के सामने प्रस्तुत करना चाहता है। इस शीशी को अर्पित करते समय वह अपने मन की पीड़ा, इच्छा या समस्या बाबा के चरणों में समर्पित करता है। दूसरी शीशी आशा और विश्वास का प्रतीक मानी जाती है। इसके माध्यम से भक्त बाबा से अपनी मनोकामना पूर्ण करने की प्रार्थना करता है और यह विश्वास व्यक्त करता है कि उसकी अर्जी अवश्य स्वीकार होगी। तीसरी शीशी कृतज्ञता का प्रतीक होती है। जब भक्त की मनोकामना पूर्ण हो जाती है, तब वह पुनः बाबा के दरबार में आकर तीसरी शीशी अर्पित करता है और प्राप्त कृपा के लिए धन्यवाद ज्ञापित करता है।

यह परंपरा केवल मांगने तक सीमित नहीं है, बल्कि धन्यवाद देने की भावना भी सिखाती है। अक्सर लोग अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए प्रार्थना तो करते हैं, लेकिन पूरी होने पर आभार व्यक्त करना भूल जाते हैं। बाबा श्याम की यह परंपरा भक्तों को कृतज्ञता का महत्व समझाती है। यह बताती है कि ईश्वर से केवल मांगना ही नहीं, बल्कि उनकी कृपा के लिए धन्यवाद देना भी उतना ही आवश्यक है।

जब कोई श्रद्धालु खाटू धाम में दर्शन के लिए पहुंचता है, तो वह इत्र की शीशियों को अपने साथ लेकर मंदिर की कतार में खड़ा होता है। दर्शन के समय मंदिर के पुजारी या सेवादार के माध्यम से इत्र बाबा के चरणों में अर्पित कराया जाता है। उस क्षण भक्त अपने हाथ जोड़कर मन ही मन अपनी प्रार्थना बाबा के समक्ष प्रस्तुत करता है। मान्यता है कि सच्चे भाव से की गई प्रार्थना अवश्य सुनी जाती है। इसके बाद प्रसाद स्वरूप पुजारी कभी-कभी इत्र की किसी एक शीशी को या थोड़ा-सा इत्र वापस भक्त को प्रदान करते हैं। इसे अत्यंत शुभ माना जाता है।

भक्त उस इत्र को अपने घर लेकर जाता है और उसे एक पवित्र स्थान पर सुरक्षित रखता है। जब उसकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है या उसकी समस्या का समाधान हो जाता है, तब वह पुनः बाबा के दरबार में पहुंचकर अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है। इस प्रकार श्रद्धा, विश्वास और धन्यवाद की यह यात्रा पूर्ण होती है। धार्मिक मान्यताओं में सुगंध का विशेष महत्व बताया गया है। प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि देवताओं को सुगंधित वस्तुएं अत्यंत प्रिय होती हैं। पूजा में धूप, चंदन, कपूर और इत्र का प्रयोग वातावरण को पवित्र बनाने के लिए किया जाता है। सुगंध मन को शांत करती है, सकारात्मक विचारों को बढ़ावा देती है और आध्यात्मिक एकाग्रता में सहायता करती है। यही कारण है कि इत्र को केवल सजावट या विलासिता की वस्तु नहीं माना गया, बल्कि उसे पूजा-पद्धति का महत्वपूर्ण अंग बनाया गया।

बाबा श्याम की पूजा में भी सुगंध का विशेष स्थान है। भक्तों का विश्वास है कि गुलाब और केसर की खुशबू बाबा को विशेष रूप से प्रिय है। इसलिए अधिकांश श्रद्धालु इन्हीं सुगंधों वाले शुद्ध और प्राकृतिक इत्र का चयन करते हैं। धार्मिक दृष्टि से माना जाता है कि कृत्रिम या मिलावटी इत्र की अपेक्षा प्राकृतिक सुगंध अधिक शुभ फल प्रदान करती है। इसलिए पूजा के लिए सदैव शुद्ध और गुणवत्तापूर्ण इत्र का ही प्रयोग करना चाहिए।

यदि कोई भक्त अपने घर में बाबा श्याम की पूजा करता है, तो वह भी इत्र सेवा कर सकता है। हालांकि इसके लिए कुछ बातों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक माना गया है। पूजा के समय पहले दीपक और धूप प्रज्वलित करनी चाहिए। इसके बाद श्रद्धापूर्वक बाबा का स्मरण करते हुए इत्र अर्पित करना चाहिए। मान्यता है कि दीपक जलने के बाद इत्र अर्पित करने से घर का वातावरण अधिक सकारात्मक और ऊर्जावान बनता है।

इत्र अर्पित करते समय संयम और मर्यादा का पालन करना भी आवश्यक माना गया है। धार्मिक परंपराओं के अनुसार इत्र को सीधे विग्रह के सिर पर नहीं लगाना चाहिए। इसके स्थान पर चरणों के समीप, फूलों की माला पर या रुई के छोटे फोहे के माध्यम से अर्पित करना अधिक उचित माना जाता है। साथ ही इत्र को अत्यधिक मात्रा में प्रयोग करने से भी बचना चाहिए। सीमित मात्रा में अर्पित किया गया इत्र अधिक प्रभावी माना जाता है, क्योंकि इससे फूलों की प्राकृतिक सुगंध भी बनी रहती है।

कई श्रद्धालु अपने दाहिने हाथ की अनामिका उंगली से इत्र स्पर्श कराकर अर्पित करते हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार यह उंगली शुभ और सात्विक कार्यों के लिए विशेष मानी जाती है। इसलिए पूजा के दौरान इसका प्रयोग अधिक पवित्र माना जाता है। हालांकि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि पूजा में बाहरी नियमों से अधिक महत्व मन की भावना का होता है। यदि भक्त का मन निर्मल है और उसकी श्रद्धा सच्ची है, तो उसकी प्रार्थना अवश्य स्वीकार होती है।

बाबा खाटू श्याम की भक्ति का मूल आधार विश्वास है। इत्र अर्पित करने की परंपरा भी इसी विश्वास को और मजबूत बनाती है। यह केवल सुगंध अर्पित करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि अपने मन के भावों को भगवान तक पहुंचाने का एक माध्यम है। जब भक्त श्रद्धा से इत्र अर्पित करता है, तो वह अपने जीवन की चिंताओं, दुखों और इच्छाओं को भी बाबा के चरणों में समर्पित कर देता है। यही समर्पण उसे मानसिक शांति और आध्यात्मिक संतोष प्रदान करता है।

आज के व्यस्त और तनावपूर्ण जीवन में जहां लोग मानसिक शांति की तलाश में भटकते रहते हैं, वहीं ऐसी धार्मिक परंपराएं उन्हें विश्वास और सकारात्मकता का सहारा देती हैं। बाबा श्याम को इत्र अर्पित करने की परंपरा भी भक्तों को यही संदेश देती है कि जीवन की हर परिस्थिति में श्रद्धा बनाए रखें, अपने प्रयास जारी रखें और ईश्वर पर भरोसा रखें। जब भक्ति की सुगंध सच्चे मन से उठती है, तो वह केवल मंदिर तक सीमित नहीं रहती, बल्कि जीवन के हर कोने को सुख, शांति और आशा की महक से भर देती है।

PRGI NO. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HARDIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

12 वर्ष : जन विश्वास के, विकास के, जन कल्याण के

गुजरात के 69 लाख किसान परिवारों के लिए आर्थिक संजीवनी बनी 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना'

▸▸ प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के तहत गुजरात में 23,083 करोड़ रुपए से अधिक की सहायता सीधे धरतीपुत्रों के खातों में जमा

▸▸ देश में 11 करोड़ से अधिक किसानों को कुल 4.27 लाख करोड़ रुपए से भी अधिक की सहायता का भुगतान किया गया

▸▸ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के दूरदृष्टिपूर्ण आयोजन से भारत के कृषि क्षेत्र की तसवीर बदली : श्री जीतूभाई वाघाणी, कृषि मंत्री, गुजरात

▸▸ समय पर सहायता मिलने से मजदूरी, डीजल, मैंटेनेंस जैसे छोटे खर्चों को पूरा करने में सरलता हुई : किसान श्री रमेशभाई पटेल

गांधीनगर : गुजरात में कृषि क्रांति तथा किसानों के आर्थिक सशक्तिकरण की दिशा में एक नया इतिहास रचा गया है। 'प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना' (पीएम किसान योजना) के तहत शुरुआत से लेकर अब तक अर्थात कुल 22 किश्तों में राज्य के 69.25 लाख से अधिक किसान परिवारों को 23,083 करोड़ रुपए से अधिक की बड़ी सहायता सीधे उनके बैंक खातों में जमा कराई गई है।

प्रधानमंत्री के रूप में श्री नरेन्द्र मोदी के सुशासन के 12 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर यह योजना भारत के कृषि क्षेत्र के लिए आर्थिक सुरक्षा कवच सिद्ध हो रही है। राष्ट्रीय स्तर पर भी इस योजना का विस्तार अभूतपूर्व रहा है, जिसके अंतर्गत देश के 11 करोड़ से अधिक किसानों को कुल 4.27 लाख करोड़ रुपए से भी अधिक की सहायता का भुगतान कर देश के अन्नदाता को आर्थिक रूप से सक्षम एवं आत्मनिर्भर बनाया गया है।

गुजरात में इस यात्रा की शुरुआत प्रथम किश्त के समय राज्य के 28.65 लाख से अधिक किसानों को 572.21 करोड़ रुपए के भुगतान के साथ हुई थी, जो आज 22 किश्तें पूर्ण होने तक 69.25 लाख लाभार्थी परिवारों तक विस्तृत हो चुकी है। हाल ही में 22वीं किश्त में गुजरात के 50.54 लाख से अधिक किसान परिवारों को 1,010 करोड़ रुपए से अधिक की सहायता राशि सीधे उनके खातों में जमा की गई है। ये आँकड़े दर्शाते हैं कि योजना का विस्तार एवं उसकी सफलता हर वर्ष निरंतर बढ़ रही है, जिससे सुदूरवर्ती किसान तक सरकारी सहायता किसी भी बाधा के बिना पारदर्शी ढंग से पहुँच रही है।

राज्य के कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने पीएम किसान योजना के विषय में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा, "पीएम किसान सम्मान निधि योजना ने धरतीपुत्रों को आर्थिक सुरक्षा कवच प्रदान किया है। इस सहायता के कारण छोटे और सीमांत किसानों को खेती में आवश्यक बीज, उर्वरक जैसे इनपुट के लिए आर्थिक मदद प्राप्त होती है।"

सामान्यतः खरीफ या रबी फसल की बुवाई के समय किसानों को बीज, उर्वरक तथा कीटनाशक दवाएँ खरीदने के लिए बड़ी वित्तीय कठिनाई का सामना करना पड़ता था, जिसके कारण पूर्व में किसान ब्याजखोरों के चक्रव्यूह में फँस जाते थे, परंतु पीएम किसान योजना अंतर्गत हर चार महीने के अंतराल पर दी जाने वाली 2,000 रुपए की किश्त किसानों के लिए आर्थिक सुरक्षा कवच बनी है।

गांधीनगर जिले के दशेला गाँव के किसान श्री गोविंदभाई पटेल कहते हैं, "सरकार की ओर से वर्ष में जो तीन किश्तें सीधे बैंक खाते में मिलती हैं, उससे हमें खेती के लिए खाद, बीज तथा कीटनाशक जैसी वस्तुएँ लेने में समय पर मदद मिल जाती है; इस राशि के कारण हम मूंगफली और कपास जैसी फसलों की बुवाई निश्चिंत होकर कर पाते हैं।"

उनकी बात में स्वर मिलाते हुए किसान श्री रमेशभाई पटेल कहते हैं, "मजदूरी, डीजल और मैंटेनेंस जैसे छोटे खर्चों से निपटने में ऐसी सरकारी योजनाएँ ही किसान को खेत में अडिग बने रहने के लिए मजबूत आधार प्रदान करती हैं।"

इस वित्तीय समर्थन के कारण गुजरात के छोटे एवं मध्यम वर्ग के किसान समय पर उत्तम गुणवत्ता का बीज ला सके हैं, जिसके कारण भूमि की उत्पादकता तथा फसल के स्वास्थ्य में बड़ा सुधार दर्ज हुआ है। और फिर, योजना की शुरुआत में रखी गई 2 हेक्टेयर तक की भूमि सीमा को प्रधानमंत्री द्वारा व्यापक जनहित में पूर्णतः समाप्त कर दिए जाने से अब राज्य के सभी भूमिधारक किसानों को इस समान आर्थिक न्याय का लाभ मिल रहा है।

इस योजना की सबसे बड़ी और मूलभूत विशेषता यह है कि इसमें बिचौलियों या भ्रष्टाचार के लिए कोई स्थान नहीं है और 100 प्रतिशत राशि सीधे डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के माध्यम से किसानों के खातों में जमा होती है। योजना में पूर्ण पारदर्शिता बनाए रखने तथा वास्तविक अन्नदाता तक ही लाभ पहुँचाने के लिए सरकार ने टेक्नोलॉजी का सुदृढ़ उपयोग किया है।

इसके अंतर्गत 12वीं किश्त से भूमि के डिजिटल रिकॉर्ड के सत्यापन की प्रक्रिया अर्थात 'लैंड सीडिंग' अनिवार्य की गई। इसके बाद 13वीं किश्त से बैंक खाते के साथ 'आधार सीडिंग' और डीबीटी प्रक्रिया अनिवार्य की गई, जबकि 15वीं किश्त से 'ई-केवाईसी' अनिवार्य किया गया है। इस थ्री-लेयर सुरक्षा प्रक्रिया के कारण बिचौलियों की भूमिका पूर्णतः समाप्त हो गई तथा योजना का लाभ केवल और केवल वास्तविक धरतीपुत्रों को ही मिल रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल के 12 वर्ष : लखपति दीदी योजना ग्रामीण महिलाओं की अर्थोपार्जन, उद्यमशीलता और नेतृत्व क्षमता को दे रही है एक नई दिशा

▸▸ गुजरात में 5.96 लाख से अधिक लखपति दीदियां, महिला आर्थिक सशक्तिकरण के क्षेत्र में राज्य की अहम प्रगति

▸▸ भावनाबेन पटेल और शिल्पाबेन पंड्या क्रमशः कैंटीन बिजनेस और फूड प्रोसेसिंग इकाई से कमा रही हैं सालाना 10 लाख रुपए

गांधीनगर : प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गत 12 वर्षों में महिलाएं भारत की विकास यात्रा का एक अभिन्न हिस्सा बन गई हैं। प्रधानमंत्री ने 'स्वच्छ भारत अभियान', 'प्रधानमंत्री जन धन योजना', 'उज्ज्वला योजना', 'पीएम मुद्रा योजना', 'पीएम आवास योजना' और 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान जैसी कई पहलों के जरिए 'महिलाओं के नेतृत्व में विकास' के विजन को लगातार आगे बढ़ाया है। इन सभी पहलों ने उद्यमशीलता, आर्थिक सशक्तिकरण और आजीविका के बेहतर अवसरों के माध्यम से नारी शक्ति को सशक्त बनाया है। इन पहलों में 'लखपति दीदी योजना' ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने, उन्हें स्थायी आय अर्जित करने के लिए प्रोत्साहित करने, वित्तीय स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता को प्रोत्साहन देने के संदर्भ में एक मुख्य कदम के रूप में उभरी है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात आजीविका संवर्धन कंपनी ने राज्य में 10 लाख संभावित लखपति दीदियों की पहचान की है, जिनमें से 5.96 लाख महिलाएं अब तक लखपति दीदियां बन चुकी हैं। यह उपलब्धि राज्यभर में महिला-केंद्रित विकास की बढ़ती शक्ति और महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण की सफलता को दर्शाती है।

राज्य सरकार ने जिला एवं तहसील स्तर पर 124 मास्टर ट्रेनर्स की नियुक्ति की है, जिन्हें राष्ट्रीय स्तर के रिसोर्स पर्सन्स द्वारा प्रशिक्षण दिया गया है। इन मास्टर ट्रेनरों ने कृषि सखियों, पशु सखियों और बैंक सखियों सहित 10,000 से अधिक कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन्स (सीआरपी) को प्रशिक्षण दिया है, जिससे इस योजना का जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन मजबूत हुआ है।

क्या है लखपति दीदी योजना?

लखपति दीदी योजना भारत सरकार की दीनदयाल अंत्योदय योजना – राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (डीएवाई-एनआरएलएम) के अंतर्गत महिलाओं द्वारा संचालित ग्रामीण आजीविका कार्यक्रम है। इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं को समूह में संगठित करके उन्हें आवश्यक प्रशिक्षण, आर्थिक सहायता, ऋण और बाजार तक पहुंच प्रदान कर आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना है। इस योजना के तहत स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) में काम करने वाली ऐसी महिलाएं, जिनके परिवारों की सालाना आय 1 लाख रुपए से अधिक है, उन्हें लखपति दीदी के रूप में पहचाना जाता है। ग्रामीण विकास मंत्रालय ग्रामीण भारत में एसएचजी के माध्यम से इस योजना को क्रियान्वित कर रहा है। उल्लेखनीय है कि डीएवाई-एनआरएलएम संरचना के अंतर्गत गुजरात देश के सक्रिय राज्यों में से एक के तौर पर उभरा है।

नवसारी के कलेक्टर ऑफिस में कैंटीन चलाने वाली भावनाबेन सालाना 10.16 लाख रुपए कमा रही हैं

नवसारी जिले की चिखली तहसील के नोगामा गांव की भावनाबेन पटेल आज गुजरात की एक सफल लखपति दीदी बन गई हैं, जो आजीविका की अनेक गतिविधियों के जरिए सालाना लगभग 10.16 लाख रुपए कमा रही हैं। वे वर्ष 2014 से गायत्री सखी मंडल के साथ जुड़ी हुई हैं, जिससे उन्हें 'राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन' के तहत आयोजित होने वाली बैठकों, वर्कशॉप और जागरूकता कार्यक्रमों के जरिए विभिन्न सरकारी योजनाओं और आजीविका के अवसरों के बारे में जानकारी मिली। मिशन मंगलम पहल से प्रेरित होकर और अपने स्वयं सहायता समूह- गायत्री सखी मंडल की सहायता से उन्होंने कैंटीन और कैटरिंग सर्विस का काम शुरू किया।

आज, भावनाबेन नवसारी के कलेक्टर ऑफिस में एक कैंटीन चलाती हैं और सखी मंडल के अन्य सदस्यों के साथ कैटरिंग सेवाएं देती हैं। उनकी सालाना आय में कैंटीन के व्यवसाय से 2 लाख रुपए, कैटरिंग सेवाओं से 5 लाख रुपए, कृषि से 1 लाख रुपए और अन्य स्रोतों से 2.16 लाख रुपए शामिल हैं, जिससे उनकी कुल सालाना आय 10.16 लाख रुपए हो गई है। उन्होंने दूसरी सरकारी योजनाओं का लाभ भी उठाया है, जैसे लैपटॉप खरीदने के लिए जिला उद्योग केंद्र से ऋण और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र से आयुष्मान कार्ड। सखी मंडल से जुड़ने के कारण भावनाबेन के जीवन में आर्थिक स्थिरता आई है, उनका जीवन स्तर बेहतर हुआ है और उनका आत्मविश्वास बढ़ गया है। अब, लखपति दीदी के रूप में वे दूसरी महिलाओं को आत्मनिर्भरता और आर्थिक सशक्तिकरण की प्रेरणा दे रही हैं।

खेड़ा जिले की शिल्पाबेन पंड्या नेचुरल शरबत के व्यवसाय से सालाना 10 लाख रुपए की कमाई करती हैं

खेड़ा जिले की महेदाबाद तहसील के नेनपुर गांव की शिल्पाबेन पंड्या अपनी फूड प्रोसेसिंग इकाई के जरिए एक सफल लखपति दीदी बन गई हैं। वे मार्च 2010 से शिल्पा सखी मंडल से जुड़ी हुई हैं और अभी वे नेनपुर विलेज ऑर्गेनाइजेशन (वीओ) और क्लस्टर लेवल फेडरेशन (सीएलएफ) में इस सखी मंडल की अध्यक्ष के तौर पर सेवाएं दे रही हैं। अपने स्वयं सहायता समूह को रिवॉल्विंग फंड मिलने के बाद, शिल्पाबेन ने पंचामृत, नींबू, स्ट्रॉबेरी और अमरूद जैसे फ्लेवर वाले बिना किसी रंग के नेचुरल शरबत बनाने का काम शुरू किया। रूरल सेल्फ-एम्प्लॉयमेंट ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट (आर-एसईटीआइ) यानी ग्रामीण स्व-रोजगार प्रशिक्षण संस्थाओं से फूड प्रोसेसिंग का प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद, उन्होंने अपने इस उद्यम का और विस्तार किया। आज, उनकी यह फूड प्रोसेसिंग इकाई न केवल उनके परिवार को आर्थिक स्थिरता देती है, बल्कि दूसरी महिलाओं के लिए आजीविका के अवसर भी पैदा करती है, और महिलाओं के नेतृत्व में आर्थिक सशक्तिकरण में योगदान देती है।

यह तो गुजरात की लखपति दीदियों के कुछ ही उदाहरण हैं। राज्यभर में ऐसी हजारों लखपति दीदियां हैं, जो लगातार प्रगति कर रही हैं, अधिक से अधिक आय अर्जित कर रही हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदर्शी पहल, यह लखपति दीदी योजना ग्रामीण स्तर पर परिवर्तन की एक सशक्त पहल बनकर उभरी है। यह योजना महिलाओं को 'आत्मनिर्भर भारत' और 'विकसित भारत' के विजन में योगदान देने के लिए बढ़ावा देती है।

परंपरागत कुंडली की भाँति 'मेडिकल कुंडली' का मिलान करना सिकल सेल जैसे आनुवंशिक रोगों के उन्मूलन का सबसे बड़ा शस्त्र : श्री प्रफुल पानशेरिया

▸▸ आगामी वर्ष-2047 तक सिकल सेल उन्मूलन के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है गुजरात : स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल पानशेरिया

▸▸ स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल पानशेरिया की अध्यक्षता में गांधीनगर में 'सिकल सेल एनीमिया - रोगी संवाद तथा मार्गदर्शन कार्यक्रम' आयोजित हुआ

गांधीनगर : स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के संयुक्त उपक्रम से मंगलवार को गांधीनगर स्थित स्वर्णिम संकुल-2 के द्वारका हॉल में स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल पानशेरिया की अध्यक्षता में 'सिकल सेल एनीमिया – रोगी संवाद तथा मार्गदर्शन कार्यक्रम' आयोजित हुआ।

इस अवसर पर स्वास्थ्य राज्य मंत्री श्री प्रफुल पानशेरिया ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के वर्ष-2047 तक देश से सिकल सेल एनीमिया का उन्मूलन करने के महाअभियान में गुजरात अग्रसर भूमिका निभा रहा है। उन्होंने जोड़ा कि आनुवंशिक रोगों को रोकने के लिए जिस प्रकार विवाह के समय परंपरागत कुंडली मिलाई जाती है, उसी प्रकार अब विवाह से पहले 'मेडिकल कुंडली' अर्थात सिकल सेल का स्टेटस – वाहक या रोगी – जाँचना अनिवार्य है, जिससे आने वाली पीढ़ी को ऐसे पीड़ादायक रोग विरासत में न मिलें।

उन्होंने आगे कहा कि वर्ष-2006 में जब देश में इस रोग के प्रति कम जागरूकता थी, तब तत्कालीन मुख्यमंत्री तथा वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गुजरात ने समग्र देश में श्रेष्ठ स्क्रीनिंग कार्य शुरू कर सिकल सेल के वाहकों और मरीजों का सटीक डेटाबेस तैयार किया था। उन्होंने जोड़ा कि यदि दृढ़ संकल्प तथा सामाजिक जागरूकता हो, तो किसी भी रोग को समाप्त किया जा सकता है।

उन्होंने आशा व्यक्त की कि वर्ष-2007 में गुजरात में पोलियो का अंतिम मामला दर्ज होने के बाद स्वास्थ्य विभाग के अथक परिश्रम से हमने राज्य को पोलियोमुक्त बनाया है; उसी प्रकार वर्ष-2047 तक सिकल सेल भी अतीत बन जाएगा।

सिकल सेल के मरीजों को हिम्मत देते हुए श्री पानशेरिया ने कहा कि यह जीवन से हार जाने का रोग नहीं है, बल्कि उचित देखभाल एवं उपचार की सहायता से इस रोग के साथ भी पूर्णतः स्वस्थ जीवन जिया जा सकता है। वर्ष-2047 के विकसित एवं स्वस्थ भारत के निर्माण के लिए गुजरात का प्रत्येक नागरिक हँसता-खिलखिलाता और निरोगी रहे; यही सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

श्री प्रफुल पानशेरिया ने स्वास्थ्य विभाग की समग्र टीम को बहुत ही संवेदनशीलता से श्रेष्ठ कार्य करने के लिए अभिनंदन दिया। इस अवसर पर सिकल सेल की बीमारी से पीड़ित बच्चों ने इस रोग की पीड़ा दर्शाने वाली एक भाववाही पेंटिंग (चित्र) श्री पानशेरिया को भेंट किया।

स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव श्री राजीव टोपनो ने कहा कि गुजरात सदैव स्वास्थ्य क्षेत्र में नवीन पहल करने में अग्रसर रहा है और राज्य के सिकल सेल कार्यक्रम को प्रधानमंत्री ने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई है। चेचक तथा पोलियो जैसे टीका-वैक्सीन आधारित रोगों की तुलना में सिकल सेल जैसे जेनेटिक रोगों का उन्मूलन अत्यंत चुनौतीपूर्ण है। गुजरात में हाल में लगभग 5.5 लाख सिकल सेल कैरियर्स तथा 30,000 सक्रिय रोगी हैं। अपर मुख्य सचिव ने जोड़ा कि वर्ष 2047 तक के इस दीर्घकालीन लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पॉपुलेशन स्क्रीनिंग एवं जेनेटिक काउंसलिंग जैसे सुदृढ़ स्तंभों के साथ 'जनजागृति' तथा 'जन भागीदारी' ही सिकल सेल को रोकने का एकमात्र प्रभावी उपाय है।

इस कार्यक्रम में सार्वजनिक स्वास्थ्य की अपर निदेशक डॉ. नीलम पटेल ने स्वागत संबोधन किया, जबकि संयुक्त निदेशक (मलेरिया) डॉ. आर. बी. पटेल ने आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम में ग्रामीण स्वास्थ्य आयुक्त तथा नेशनल हेल्थ मिशन निदेशक डॉ. रतनकँवर गढवी चारण, धन्वंतरि ट्रस्ट के संस्थापक डॉ. अतुल देसाई सहित उच्च अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित रहे।

योग: प्राकृतिक सौंदर्य, स्वस्थ त्वचा और दीर्घकालिक यौवन का सरल रहस्य- शहनाज हुसैन

आधुनिक जीवनशैली में सुंदर दिखने की चाहत पहले से कहीं अधिक बढ़ गई है। चमकदार त्वचा, स्वस्थ बाल, छरहरा शरीर और आकर्षक व्यक्तित्व पाने के लिए लोग जिम, फिटनेस सेंटर, स्पा, ब्यूटी सैलून और महंगे सौंदर्य उत्पादों पर बड़ी राशि खर्च कर रहे हैं। बाजार में उपलब्ध सौंदर्य प्रसाधनों और उपचारों की लंबी श्रृंखला लोगों को त्वरित सौंदर्य लाभ का वादा करती है, लेकिन अक्सर इनका प्रभाव सीमित समय तक ही दिखाई देता है। कुछ दिनों बाद त्वचा फिर से पहले जैसी लगने लगती है और व्यक्ति निराश हो जाता है। आज का वातावरण प्रदूषण, मानसिक तनाव, अनियमित दिनचर्या और लगातार भागदौड़ से भरा हुआ है। इसका सीधा प्रभाव हमारी त्वचा, बालों और संपूर्ण स्वास्थ्य पर पड़ता है। कम उम्र में ही चेहरे पर झुर्रियां, कील-मुंहासे, काले धब्बे, त्वचा की निस्तेजता और बालों के झड़ने जैसी समस्याएं दिखाई देने लगती हैं। ऐसे में अधिकांश लोग यह मान लेते हैं कि सुंदरता केवल जन्मजात गुण है, जबकि वास्तविकता इससे कहीं अलग है।

सच्चा सौंदर्य केवल बाहरी प्रसाधनों से नहीं आता, बल्कि शरीर और मन के भीतर मौजूद संतुलन से उत्पन्न होता है। जब व्यक्ति अंदर से स्वस्थ, शांत और ऊर्जावान होता है तो उसका प्रभाव स्वतः चेहरे और व्यक्तित्व पर दिखाई देता है। यही कारण है कि योग को केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि संपूर्ण जीवनशैली माना गया है। योग शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करता है और प्राकृतिक रूप से सौंदर्य को निखारने में सहायता करता है।

योगासन और प्राणायाम का नियमित अभ्यास शरीर को स्वस्थ रखने के साथ-साथ त्वचा और बालों के स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है। यदि योग को दैनिक जीवन का हिस्सा बना लिया जाए तो लंबे समय तक युवा, ऊर्जावान और आकर्षक बने रहना संभव है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके लिए किसी महंगे उपकरण, विशेष स्थान या बड़े खर्च की आवश्यकता नहीं होती। प्रतिदिन कुछ समय का अभ्यास ही पर्याप्त होता है।

सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, कपालभाति, धनुरासन और विभिन्न श्वास क्रियाएं ऐसे योग अभ्यास हैं जो शरीर में ऊर्जा का संचार बढ़ाते हैं। प्रतिदिन सुबह और शाम लगभग आधा घंटा योग करने से शरीर की कार्यक्षमता में सुधार होता है और त्वचा पर सकारात्मक प्रभाव दिखाई देने लगता है। नियमित अभ्यास से शरीर में स्फूर्ति आती है, मानसिक तनाव कम होता है और चेहरे पर प्राकृतिक आभा विकसित होती है।

प्राणायाम को सौंदर्य और स्वास्थ्य दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। यह केवल श्वास लेने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि शरीर में प्राण ऊर्जा के संतुलित प्रवाह का माध्यम है। सही ढंग से किया गया प्राणायाम शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ाने में मदद करता है। इससे रक्त संचार बेहतर होता है और शरीर की कोशिकाओं तक पर्याप्त ऑक्सीजन तथा पोषक तत्व पहुंचते हैं। परिणामस्वरूप त्वचा अधिक स्वस्थ और चमकदार दिखाई देती है।

मानसिक तनाव को समय से पहले बुढ़ापे का एक प्रमुख कारण माना जाता है। तनाव के कारण हार्मोनल असंतुलन पैदा हो सकता है, जिससे त्वचा पर मुंहासे, काले धब्बे और अन्य समस्याएं उभरने लगती हैं। प्राणायाम तनाव को नियंत्रित करने में प्रभावी भूमिका निभाता है। नियमित अभ्यास से मन शांत होता है, नींद की गुणवत्ता बेहतर होती है और शरीर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यही सकारात्मकता चेहरे पर भी झलकती है।

बालों के स्वास्थ्य के लिए भी प्राणायाम लाभकारी माना जाता है। बेहतर रक्त संचार के कारण सिर की त्वचा और बालों की जड़ों तक अधिक पोषण पहुंचता है। इससे बाल मजबूत बन सकते हैं और उनकी गुणवत्ता में सुधार हो सकता है। स्वस्थ जीवनशैली, संतुलित आहार और योग के संयुक्त प्रभाव से बालों का स्वास्थ्य लंबे समय तक बनाए रखने में सहायता मिलती है। कपालभाति एक लोकप्रिय योग क्रिया है जो श्वसन तंत्र को सक्रिय करने और शरीर को ऊर्जावान बनाने में सहायक मानी जाती है। इसके नियमित अभ्यास से व्यक्ति स्वयं को अधिक हल्का और सक्रिय महसूस कर सकता है। वहीं धनुरासन शरीर में रक्त प्रवाह को बेहतर बनाने और मांसपेशियों को सक्रिय रखने में मदद करता है। योग विशेषज्ञों के अनुसार इन आसनों के नियमित अभ्यास से शरीर की कार्यक्षमता बढ़ती है और त्वचा के स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। उत्थान आसन और अन्य स्ट्रेचिंग योगासन शरीर की लचक बनाए रखने में सहायक होते हैं। बढ़ती उम्र के साथ शरीर में जकड़न और कठोरता आना सामान्य है, लेकिन नियमित योगाभ्यास से रीढ़ की हड्डी और जोड़ों की लचीलापन बनाए रखने में मदद मिलती है। लचीला शरीर न केवल स्वस्थ दिखता है, बल्कि व्यक्ति को अधिक ऊर्जावान और युवा भी प्रतीत कराता है। सूर्य नमस्कार को योग की सबसे प्रभावी प्रक्रियाओं में से एक माना जाता है। इसमें कई आसनों का समावेश होता है, जिससे पूरे शरीर का व्यायाम हो जाता है। यह रक्त संचार को बेहतर बनाने, शरीर की मांसपेशियों को सक्रिय रखने और ऊर्जा स्तर बढ़ाने में मदद करता है। नियमित सूर्य नमस्कार शरीर को चुस्त-दुरुस्त बनाए रखने के साथ-साथ त्वचा में भी प्राकृतिक चमक लाने में सहायक माना जाता है। योग का एक महत्वपूर्ण लाभ यह है कि यह रक्त संचार में सुधार करता है। जब त्वचा की गहरी परतों तक पर्याप्त रक्त पहुंचता है तो वहां ऑक्सीजन और पोषक तत्वों की आपूर्ति बेहतर होती है। इससे त्वचा अधिक स्वस्थ, ताजा और जीवंत दिखाई देती है। यही कारण है कि नियमित योगाभ्यास करने वाले लोगों के चेहरे पर अक्सर प्राकृतिक निखार देखा जाता है।

वैश्विक संकट की आहट: फिच ने घटाया भारत की विकास दर का अनुमान, महंगाई बढ़ने की चेतावनी

नई दिल्ली। वैश्विक आर्थिक अनिश्चितताओं और पश्चिम एशिया में बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव के बीच भारत की अर्थव्यवस्था को लेकर एक महत्वपूर्ण आकलन सामने आया है। अंतरराष्ट्रीय रेटिंग एजेंसी फिच रेटिंग्स ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए भारत की आर्थिक वृद्धि दर के अनुमान में कटौती करते हुए इसे 6.7 प्रतिशत से घटाकर 6.4 प्रतिशत कर दिया है। एजेंसी का मानना है कि पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष, वैश्विक ऊर्जा बाजार में अस्थिरता और कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें भारत सहित कई उभरती अर्थव्यवस्थाओं की विकास गति को प्रभावित कर सकती हैं। हालांकि फिच ने यह भी स्पष्ट किया है कि भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियादी स्थिति अब भी मजबूत बनी हुई है और घरेलू मांग तथा निवेश गतिविधियां विकास को सहारा देती रहेंगी। एजेंसी की ताजा वैश्विक आर्थिक परिदृश्य रिपोर्ट में कहा गया है कि बाहरी परिस्थितियां चुनौतीपूर्ण होने के बावजूद भारत की आंतरिक आर्थिक क्षमता उसे अपेक्षाकृत बेहतर स्थिति में बनाए रख सकती है। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में शामिल है। पिछले कुछ वर्षों में बुनियादी ढांचा विकास, डिजिटल अर्थव्यवस्था, विनिर्माण क्षेत्र के विस्तार और उपभोक्ता मांग में वृद्धि ने आर्थिक गतिविधियों को मजबूती प्रदान की है। यही कारण है कि वैश्विक चुनौतियों के बावजूद भारत की विकास दर अभी भी अधिकांश प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में काफी बेहतर मानी जा रही है। फिर भी फिच का यह संशोधित अनुमान संकेत देता है कि अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों का प्रभाव अब भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी दिखाई देने लगा है। फिच के अनुसार आर्थिक वृद्धि की रफ्तार में कुछ नरमी आ सकती है, लेकिन घरेलू खपत और निजी निवेश आने वाले समय में अर्थव्यवस्था को गति प्रदान करते रहेंगे। रिपोर्ट में कहा गया है कि वास्तविक आयात में संभावित कमी और कुछ क्षेत्रों में बेहतर उत्पादन क्षमता के कारण बाहरी मांग का योगदान भी वृद्धि को समर्थन दे सकता है। इसके बावजूद वैश्विक व्यापार और ऊर्जा बाजार में बनी अनिश्चितता को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। विशेषज्ञों का मानना है कि भारत जैसे ऊर्जा आयात पर निर्भर देश के लिए कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि सबसे बड़ी चुनौती बन सकती है। देश अपनी ऊर्जा जरूरतों का बड़ा हिस्सा आयात के माध्यम से पूरा करता है। ऐसे में अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल महंगा होने का सीधा असर परिवहन, उत्पादन लागत, बिजली, उर्वरक और दैनिक उपयोग की अनेक वस्तुओं पर पड़ता है। यही कारण है कि ऊर्जा कीमतों में तेजी का प्रभाव केवल पेट्रोल और डीजल तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था में दिखाई देता है। फिच ने अपनी रिपोर्ट में ऊर्जा कीमतों को लेकर विशेष चिंता व्यक्त की है। एजेंसी का कहना है कि तेल की बढ़ती कीमतों से आम लोगों की वास्तविक आय पर दबाव बढ़ सकता है। जब उपभोक्ताओं की आय का बड़ा हिस्सा ईंधन, परिवहन और आवश्यक वस्तुओं पर खर्च होने लगता है, तो अन्य वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च करने की उनकी क्षमता घट जाती है। इसका सीधा असर उपभोक्ता मांग पर पड़ता है, जो किसी भी अर्थव्यवस्था की वृद्धि का महत्वपूर्ण आधार होती है।

रिपोर्ट के अनुसार वित्त वर्ष की दूसरी और तीसरी तिमाही में उपभोक्ता खर्च पर दबाव अधिक दिखाई दे सकता है। यदि ऊर्जा कीमतें लंबे समय तक ऊंचे स्तर पर बनी रहती हैं, तो इसका प्रभाव उद्योगों की लागत संरचना और निवेश योजनाओं पर भी पड़ सकता है। कई कंपनियों को बढ़ती लागत का बोझ उपभोक्ताओं पर डालना पड़ सकता है, जिससे महंगाई और बढ़ने की आशंका रहती है।

फिच ने कच्चे तेल के संबंध में अपने अनुमान में भी बड़ा बदलाव किया है। एजेंसी ने ब्रेंट क्रूड का औसत मूल्य अनुमान बढ़ाकर 87 डॉलर प्रति बैरल कर दिया है, जबकि पहले यह 70 डॉलर प्रति बैरल अनुमानित था। यह संशोधन इस बात का संकेत है कि वैश्विक ऊर्जा बाजार में अस्थिरता पहले की तुलना में अधिक गंभीर हो चुकी है। पश्चिम एशिया में जारी तनाव और संभावित आपूर्ति बाधाओं को देखते हुए एजेंसी ने तेल कीमतों में लंबे समय तक दबाव बने रहने की संभावना जताई है। रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि पश्चिम एशिया संकट के कारण होर्मुज जलडमरूमध्य के जुलाई तक प्रभावित रहने की आशंका है। यह जलमार्ग दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा परिवहन मार्गों में गिना जाता है।

पश्चिम रेलवे
अहमदाबाद मंडल

ट्रैक मशीनों के पीओएच से संबंधित मरम्मत कार्य

ई-निविदा सूचना संख्या 01/2026-27 दिनांक 09.06.2026 कार्य का नाम: सीपीओएच, अहमदाबाद में 120 ट्रैक मशीनों के पीओएच से संबंधित मरम्मत कार्य, अवधि 03 वर्ष। **निविदा संख्या: CWMCPOHADI2026-27-3 विज्ञापित निविदा लागत:** ₹1421036977.43/- **ईएमडी राशि:** ₹28420700.00/- **निविदा बंद होने की तिथि:** 15.07.2026 @ 15:00 बजे **निविदा खोलने की तिथि:** 15.07.2026 @ 15:15 बजे **आईआरईपीएस पर निविदा अपलोड करने की तिथि:** 09.06.2026

ADI 061

हमें लाइक करें: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे

निर्माण कार्य

डेप्युटी चीफ इंजीनियर (कंस्ट्रक्शन) II, वेस्टर्न रेलवे, रतलाम (MP) टेंडर नंबर: RTM-Pitline-DyCE-C-II-01 आमंत्रित करता है। काम का नाम: इंटीग्रेटेड कोचिंग डिपो में पिट लाइन, संबंधित इंफ्रास्ट्रक्चर के प्रोविजन के काम के संबंध में पिट लाइन का कंस्ट्रक्शन अंडर -42" NIT प्राइस: ₹ 56173820.91/- EMD: ₹ 1123500/- जमा करने की तारीख और समय: ता.30.06.2026 को 15.00 बजे तक। खुलने की तारीख और समय: ता. 30.06.2026 को 15.30 बजे। ज़्यादा जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर जाएं।

0216

हमें लाईक करें: facebook.com/WesternRly

पंचायतों को विभिन्न स्थानीय परियोजनाओं-प्रोजेक्ट्स के माध्यम से आय के स्रोत शुरू कर 'आत्मनिर्भर पंचायत' बनने की दिशा में कार्य करना होगा : पंचायती राज मंत्रालय के सचिव श्री विवेक भारद्वाज

▶▶ गुजरात की सभी 14 हजार से अधिक पंचायतों को 'आत्मनिर्भर पंचायत' बनाने के लिए संयुक्त प्रयास आवश्यक : पंचायत विभाग के प्रधान सचिव श्री धनंजय द्विवेदी

▶▶ गांधीनगर में 'आत्मनिर्भर पंचायत' कार्यक्रम पर एक दिवसीय राज्य स्तरीय आउटरीच वर्कशॉप सम्पन्न

▶▶ केन्द्रीय पंचायती राज मंत्रालय द्वारा 'आत्मनिर्भर पंचायत कार्यक्रम' अंतर्गत गुजरात की 71 पंचायतों का प्राथमिक चयन

गांधीनगर : पंचायती राज मंत्रालय के सचिव श्री विवेक भारद्वाज ने गांधीनगर में आयोजित 'आत्मनिर्भर पंचायत कार्यक्रम' वर्कशॉप में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर भारत के विजन को आगे बढ़ाने के लिए अब पंचायतों को विभिन्न स्थानीय परियोजनाओं-प्रोजेक्ट्स के माध्यम से आय के स्रोत सृजित कर आत्मनिर्भर पंचायत बनने की दिशा में कार्य करना होगा। ये प्रोजेक्ट्स साकार करने के लिए पंचायत मंत्रालय द्वारा विभिन्न तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध कराया जाएगा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य पंचायतों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर, नवीन तथा विकासोन्मुखी बनाना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'आत्मनिर्भर भारत' के दूरदर्शी विजन को साकार करने के मजबूत कदम के रूप में भारत सरकार के पंचायती राज मंत्रालय द्वारा 'आत्मनिर्भर पंचायत' कार्यक्रम अंतर्गत मंगलवार को गांधीनगर स्थित होटल लीला में एक दिवसीय राज्य स्तरीय आउटरीच वर्कशॉप का आयोजन किया गया। इस वर्कशॉप में गुजरात के पंचायत विभाग के प्रधान सचिव श्री धनंजय द्विवेदी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

श्री भारद्वाज ने आगे कहा कि कोरोना महामारी के दौरान भारत ने केवल अपनी आवश्यकताएँ पूरी नहीं कीय थीं, अपितु 'वैक्सीन मैत्री' अभियान द्वारा लगभग 96 देशों को करोड़ों वैक्सीन डोज

भी भेजे थे। इसी आत्मनिर्भर भारत के विजन को आगे बढ़ाने के लिए अब पंचायतों को भी विभिन्न स्थानीय परियोजनाएँ शुरू कर आत्मनिर्भर बनाने की आवश्यकता पर बल दिया गया है। उन्होंने जोड़ा कि भारत की स्वतंत्रता के बाद के शुरुआती वर्ष बहुत ही चुनौतीपूर्ण रहे थे। देश विभाजन, युद्धों, अकाल तथा अनाज की कमी जैसी गंभीर समस्याओं से गुजरा था, जिसके कारण भारत को विदेशी सहायता पर निर्भर रहना पड़ता था, परंतु समय के साथ देश ने आत्मनिर्भरता की दिशा में मजबूत कदम उठाए। वर्ष 2003 में भारत ने अधिकांश विदेशी सहायता लेना बंद किया और अफ्रीका के कुछ देशों का ऋण भी माफ किया। उन्होंने कहा कि पंचायतों को अपनी आय बढ़ाने के लिए स्थानीय संसाधनों एवं विशेषताओं से आर्थिक उपार्जन प्राप्त करना चाहिए। इंडियन स्टैंडर्ड टाइम रेखा, कर्कवृत्त, स्टैच्यू ऑफ यूनिटी या समुद्र तट जैसे स्थानों का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि उचित आयोजन तथा नवीन विचारधारा द्वारा पर्यटन एवं अन्य गतिविधियों से बड़ी आय और रोजगार का सृजन किया जा सकता है। इस प्रकार; पंचायतें सरकार के अनुदान पर निर्भर रहने के स्थान पर अपने संसाधनों के आधार पर आत्मनिर्भर एवं समृद्ध बनेंगी। हमारे देश में ऐसी अनेक ग्राम पंचायतें और ब्लॉक पंचायतें हैं, जिनके प्रोजेक्ट्स वर्तमान में भी अच्छी आय सृजित कर रहे हैं। पंचायत विभाग के प्रधान सचिव श्री धनंजय द्विवेदी ने कहा कि केन्द्र के पंचायती राज मंत्रालय द्वारा 'आत्मनिर्भर पंचायत कार्यक्रम' अंतर्गत गुजरात की 71 पंचायतें 'आत्मनिर्भर पंचायत' के रूप में चयनित हुई हैं, जो गौरव समान है, परंत हमें 71 पंचायतों तक सीमित नहीं रहना है, बल्कि मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में गुजरात की सभी 14 हजार से अधिक पंचायतों को 'आत्मनिर्भर पंचायत' बनाने के लिए संयुक्त प्रयास करने हैं। हमारी शासन व्यवस्था में सबसे ऊपर केन्द्र, बीच में राज्य तथा सबसे नीचे लोकल सेल्फ गवर्नमेंट अर्थात स्थानीय निकाय संस्थान हैं। प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत-2047' का सपना केवल केन्द्र या राज्य सरकारों के प्रयासों से पूरा नहीं हो सकता, जब तक कि जिला, तहसील तथा ग्राम पंचायतें समान गति एवं ऊर्जा के साथ इस दौड़ में सहभागी न हों। श्री द्विवेदी ने कहा कि पंचायतें केवल 'प्रशासनिक इकाइयाँ' नहीं, बल्कि लोकतंत्र की जीवंत इकाइयाँ हैं। पंचायतें केन्द्र या राज्य की ओर प्राप्त होने वाले अनुदान का उपयोग करने और सुविधाएँ उपलब्ध कराने वाली इकाई होने के साथ-साथ लोकतंत्र की सबसे महत्वपूर्ण पाठशाला हैं। ग्रामीण स्तर से ही नेतृत्व तैयार होकर राज्य तथा राष्ट्र स्तर तक पहुँचता है और देश के विकास में अपना योगदान देता है। उन्होंने अपेक्षा व्यक्त की कि ग्रामीण स्तर पर सुविधाएँ शहर जैसी होनी चाहिए। आज के ग्रामीण नागरिक की भी ऊँची आकांक्षाएँ-अपेक्षाएँ होती हैं। अहमदाबाद जैसे विकसित शहरों में जिस तरह की सुविधाएँ उपलब्ध हों, वैसी ही 'क्वालिटी ऑफ लाइफ'-सुविधाएँ गाँवों के नागरिकों को भी मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा कि केवल सरकारी ग्रांट की सीमा में रहकर काम करना एक 'मैनेजर' का कार्य है, जबकि अपनी सीमाओं से बाहर आकर गाँव को आत्मनिर्भर बनाना एक 'लीडर' का कार्य है। हमें आत्मनिर्भर पंचायत का दायरा बढ़ाना होगा। केन्द्र सरकार की इस योजना में भले ही प्रारंभ में कुछ मानदंड, जैसे कि ग्राम पंचायत की आय 50 लाख रुपए या तहसील की 1 करोड़ रुपए के आधार पर गुजरात की 71 पंचायतों का ही प्राथमिक चयन हुआ हो, लेकिन यह विचार केवल वहीं तक सीमित नहीं रहना चाहिए। यदि कोई पंचायत आज 49 लाख रुपए या 95 लाख रुपए पर है, तो वह कुछ और प्रयासों से इस लक्ष्य को पार कर सकती है। प्रधान सचिव ने आत्मनिर्भरता के इस मंत्र को गुजरात की सभी 14 हजार से अधिक पंचायतों तक पहुँचाने का आह्वान किया। उन्होंने जोड़ा कि यह एक सरकारी कार्यक्रम नहीं है, अपितु पंचायत को आत्मनिर्भर बनाने का एक 'जीवंत विचार' है। 20 वर्ष बाद भारत देश जब अपना अमृत काल यानी कि अपनी स्वतंत्रता के 100 वर्ष पूर्ण करेगा, तब प्रत्येक सरपंच, पटवारी और अधिकारी गर्व से कह सकेगा कि राष्ट्र निर्माण में उसके गाँव तथा क्षेत्र का भी अमूल्य योगदान रहा है।

इस अवसर पर अपर विकास आयुक्त डॉ. गौरव दहिया ने कहा कि गुजरात में ग्राम पंचायतों को आर्थिक रूप से अधिक सशक्त तथा आत्मनिर्भर बनाने के लिए 'आत्मनिर्भर पंचायत कार्यक्रम' का प्रारंभ किया गया है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य ग्राम पंचायतों की अपनी आय में वृद्धि कर उन्हें केवल केन्द्र और राज्य के अनुदानों पर निर्भर रहने के बजाय आत्मनिर्भर बनाना है। इस कार्यक्रम अंतर्गत हाल में गुजरात में 71 ग्राम पंचायतों का 'आत्मनिर्भर पंचायत' के रूप में प्राथमिक चयन किया गया है। श्री दहिया ने आगे कहा कि जैसे शहरी स्थानीय निकाय संस्थान मजबूत बजटिंग तथा स्वतंत्र आय स्रोतों के माध्यम से सफलतापूर्वक कार्यरत हैं, उसी प्रकार ग्राम पंचायतों को भी मजबूत वित्तीय प्रबंधन की ओर आगे बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। राज्य की सभी 14,650 ग्राम पंचायतें आत्मनिर्भर बनें; ऐसे दूरदृष्टिपूर्ण लक्ष्य के साथ यह पहल शुरू की गई है। केन्द्र-राज्य सरकार तथा राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बोर्ड (नाबार्ड) के सहयोग से आयोजित यह कार्यक्रम ग्रामीण विकास में नई दिशा स्थापित करेगा तथा स्थानीय निकाय संस्थानों को अधिक सशक्त, उत्तरदायी और विकासोन्मुखी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। नाबार्ड के क्षेत्रीय प्रबंधक डॉ. प्रदीप ने कहा कि इस संस्थान द्वारा ग्रामीण विकास, कृषि समृद्धि तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। नाबार्ड ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों, बाजार, पानी की सुविधाओं और अन्य ढाँचागत विकास के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। इसके अतिरिक्त; कृषि क्षेत्र में आधुनिक टेक्नोलॉजी का प्रसार, जल संचय तथा सिंचाई सुविधाओं के विकास द्वारा किसानों की उत्पादन क्षमता बढ़ाने के अनेक सफल प्रयोग शुरू किए गए हैं। इस प्रकार; नाबार्ड के इन प्रयासों से गाँवों में कनेक्टिविटी, रोजगार तथा आर्थिक विकास को नई दिशा मिली है। उन्होंने आगे कहा कि नाबार्ड ने सहकारिता क्षेत्र, जिला सहकारी बैंकों, कृषि उत्पादक संगठनों और महिला स्वयंसहायता समूहों को सशक्त बनाने के लिए भी विशेष कार्य किए हैं। ग्राम पंचायतें अपनी आय के स्रोत विकसित कर सकें; इसके लिए नाबार्ड द्वारा विभिन्न विकास योजनाएँ और डीपीआर तैयार किए गए हैं।

ग्राम हाट, फिल्टर किए गए पेयजल की सुविधा, कृषि उत्पादों का संग्रह तथा प्रोसेसिंग, छोटे उद्योग, गोदाम निर्माण एवं कमोडिटी आधारित व्यवसाय जैसे मॉडलों द्वारा ग्राम पंचायतों को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने जोड़ा कि ऐसे आय आधारित प्रयोगों से ग्राम पंचायतें केवल सरकारी अनुदानों पर निर्भर रहने के स्थान पर अपने संसाधनों द्वारा विकास कार्यों को गति दे सकेंगी और गाँवों में सर्वांगीण विकास का नया मॉडल स्थापित कर सकेंगी।

अहमदाबाद मंडल पर "अंतर्राष्ट्रीय लेवल क्रॉसिंग जागरूकता दिवस" का आयोजन

रेल मंत्रालय के निर्देशानुसार पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में 07 जून 2026 से 09 जून 2026 तक अंतर्राष्ट्रीय लेवल क्रॉसिंग जागरूकता दिवस (ILCAD) का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य आम नागरिकों एवं वाहन चालकों को समपार फाटकों (लेवल क्रॉसिंग) को सुरक्षित ढंग से पार करने के प्रति जागरूक करना तथा दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु सावधानी बरतने का संदेश देना था।

इस अवसर पर संरक्षा विभाग के वरिष्ठ मंडल संरक्षा अधिकारी, सहायक मंडल संरक्षा अधिकारी एवं संरक्षा सलाहकारों के नेतृत्व में विभिन्न विभागों की संयुक्त टीमों द्वारा व्यापक जन-जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के अंतर्गत 07 जून 2026 को असारवा–हिम्मतनगर खंड के समपार फाटक संख्या 6 एवं 10, 08 जून 2026 को अहमदाबाद–गेरतपुर खंड के समपार फाटक संख्या 305 एवं 308 तथा 09 जून 2026 को अहमदाबाद–पालनपुर खंड के समपार फाटक संख्या

240 एवं अहमदाबाद–विरमगाम खंड के समपार फाटक संख्या 7 पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इन स्थानों पर आने-जाने वाले नागरिकों एवं वाहन चालकों को समपार फाटकों पर बरती जाने वाली आवश्यक सावधानियों के प्रति जागरूक किया गया। सुरक्षा संबंधी बैनर लगाए गए तथा जनसामान्य को हैंड पम्पलेट वितरित किए गए। लोगों को प्रभावी ढंग से जागरूक करने के लिए सभी चयनित समपार फाटकों पर नुक्कड़ नाटकों का भी आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों में संरक्षा विभाग के अतिरिक्त अन्य विभागों के पर्यवेक्षकों की भी सक्रिय भागीदारी रही।

इसके अतिरिक्त अहमदाबाद मंडल के सभी खंडों के समपार फाटकों पर संबंधित खंड अभियंताओं एवं यातायात निरीक्षकों द्वारा भी सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए। समपार फाटकों पर सुरक्षा संबंधी बैनर लगाए गए, नागरिकों एवं वाहन चालकों को हैंड पम्पलेट वितरित किए गए तथा नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से सुरक्षित व्यवहार अपनाने का संदेश दिया गया।

इस प्रकार के जन-जागरूकता कार्यक्रम रेलवे समपार फाटकों के सुरक्षित प्रबंधन तथा रेलवे क्रॉसिंग पर सुरक्षा एवं सजगता को बढ़ावा देने की दिशा में एक प्रभावी प्रयास हैं। पश्चिम रेलवे का अहमदाबाद मंडल नागरिकों से अपील करता है कि वे समपार फाटकों को पार करते समय निर्धारित नियमों का पालन करें तथा अपनी एवं दूसरों की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

वर्ष 2026 के समर सीजन में अहमदाबाद के कांकरिया लेकफ्रंट पर 6.72 लाख से अधिक पर्यटकों का आगमन

▶▶ कांकरिया लेकफ्रंट बना पर्यटन आधारित शहरी विकास की सफल मिसाल

▶▶ VGRC सेंट्रल गुजरात से पहले पर्यटन आधारित विकास मॉडल के रूप में उभरा कांकरिया लेकफ्रंट

गांधीनगर, 09 जून : गुजरात 29 और 30 जून 2026 को वडोदरा स्थित GSFC यूनिवर्सिटी में आयोजित होने जा रहे 'वाइब्रेंट गुजरात रीजनल कॉन्फ्रेंस' (VGRC) सेंट्रल गुजरात क्षेत्र की मेजबानी की तैयारी कर रहा है। इस कॉन्फ्रेंस में पर्यटन और संस्कृति को क्षेत्रीय आर्थिक विकास के प्रमुख क्षेत्रों के रूप में चिन्हित किया गया है।

इसी संदर्भ में अहमदाबाद का कांकरिया लेकफ्रंट एक प्रभावी उदाहरण बनकर सामने आया है, जहाँ विकसित पर्यटन अधोसंरचना, सांस्कृतिक गतिविधियों और मनोरंजन सुविधाओं ने न केवल शहरी विकास को नई दिशा दी है, बल्कि आर्थिक गतिविधियों को भी गति प्रदान की है।

सिर्फ 38 दिनों में 6.72 लाख से अधिक पर्यटकों का आगमन

अहमदाबाद के मणिनगर क्षेत्र में स्थित कांकरिया लेकफ्रंट आज शहर के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक बन चुका है। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व रखने वाला कांकरिया झील क्षेत्र अब आधुनिक पर्यटन एवं मनोरंजन केंद्र के रूप में विकसित हो चुका है, जो हर वर्ष गुजरात सहित देश और विदेश से लाखों पर्यटकों को आकर्षित करता है।

कांकरिया लेकफ्रंट की लोकप्रियता का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अहमदाबाद म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन (AMC) के अनुसार 27 अप्रैल से 3 जून 2026 के बीच यहाँ कुल 6 लाख 72 हजार 785 पर्यटकों का आगमन दर्ज किया गया।

2008 के पुनर्विकास ने बदली कांकरिया की पहचान

वर्ष 2008 में कांकरिया लेकफ्रंट का समग्र पुनर्विकास कर इसे विश्वस्तरीय

सार्वजनिक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया था। उल्लेखनीय है कि 25 दिसंबर 2008 को तत्कालीन मुख्यमंत्री और वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा इसका उद्घाटन किया गया था। इस परियोजना के तहत आधुनिक सुविधाओं, आकर्षक सार्वजनिक स्थलों और सांस्कृतिक एवं मनोरंजन गतिविधियों को विकसित कर कांकरिया को शहर के प्रमुख पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित किया गया।

पर्यटन से स्थानीय अर्थव्यवस्था और रोजगार को मिल रही नई गति

कांकरिया लेकफ्रंट की सफलता यह दर्शाती है कि पर्यटन अधोसंरचना में रणनीतिक निवेश किस प्रकार शहरी क्षेत्रों को आर्थिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सशक्त बना सकता है। पर्यटकों की लगातार बढ़ती संख्या ने आतिथ्य, खाद्य और रिटेल क्षेत्रों को भी महत्वपूर्ण बढ़ावा दिया है, जिससे स्थानीय व्यवसायों और रोजगार के अवसरों को नई मजबूती मिली है।

गुजरात की ये उपलब्धियाँ आगामी VGRC सेंट्रल गुजरात के उद्देश्यों के अनुरूप है, जहाँ पर्यटन और संस्कृति के माध्यम से सतत क्षेत्रीय विकास की संभावनाओं पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाएगा। पर्यटन एवं संस्कृति आधारित विकास के इस मॉडल के रूप में कांकरिया लेकफ्रंट आज इस बात का प्रभावी उदाहरण बन चुका है कि सुनियोजित पर्यटन पहलें किस प्रकार आर्थिक विकास, सिटी ब्रांडिंग और गुजरात को एक प्रमुख पर्यटन गंतव्य के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल का राज्य के किसानों के व्यापक हित में महत्वपूर्ण निर्णय

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने राज्य के किसानों के व्यापक हित में आगामी 11 जून, गुरुवार से नर्मदा नहरों से सिंचाई के लिए पानी छोड़ने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया है।

मुख्यमंत्री के समक्ष नर्मदा कमांड क्षेत्र के विधायकों तथा सांसदों ने सिंचाई के लिए जल्द पानी छोड़ने के संबंध में प्रस्तुतियां की थीं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इन प्रस्तुतियों का सकारात्मक प्रतिक्रिया देते हुए नर्मदा योजना के वरिष्ठ अधिकारियों की एक तत्काल उच्च स्तरीय बैठक बुलाई और नर्मदा योजना में उपलब्ध पानी के भंडार की समीक्षा की।

मुख्यमंत्री ने इस बैठक में किसानों की फसलों के लिए सिंचाई जल की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नर्मदा योजना की नहरों से सिंचाई के लिए नियोजित समय से पहले यानी 11 जून 2026, गुरुवार से पानी छोड़ने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में आयोजित इस उच्चस्तरीय बैठक में सरदार सरोवर नर्मदा निगम के अध्यक्ष श्री मुकेश पुरी, जल आपूर्ति विभाग की प्रधान सचिव श्रीमती शाहमीना हुसैन, मुख्यमंत्री के अपर प्रधान सचिव डॉ. विक्रांत पांडे, सचिव डॉ. अजय कुमार, सरदार सरोवर नर्मदा निगम के निदेशक (एरिया कमांड) श्री राबडिया, निदेशक (कैनाल) तथा जल आपूर्ति बोर्ड के सदस्य सचिव श्री भगदेव उपस्थित रहे।

जेतलसर रेलवे स्टेशन पर परिचालन क्षमता को और सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल द्वारा रेल परिचालन को अधिक सुरक्षित, सुचारु एवं दक्ष बनाने के उद्देश्य से निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में जेतलसर रेलवे स्टेशन पर लोको पायलट एवं सहायक लोको पायलटों की नई नियुक्तियों के माध्यम से परिचालन व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ किया गया है।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने जानकारी देते हुए बताया कि रेलवे भर्ती बोर्ड (RRB) के माध्यम से चयनित तथा सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूर्ण कर चुके सहायक लोको पायलटों की विभिन्न परिचालन केंद्रों पर नियमित पदस्थापना की गई है। इसी कड़ी में जेतलसर क्रू लॉबी में भी नए कर्मचारियों की नियुक्ति की गई है। इस नियुक्ति आदेश के माध्यम से जेतलसर स्टेशन पर दो लोको पायलट एवं तीन सहायक लोको पायलटों की तैनाती की गई है, जिससे रेल संचालन की कार्यक्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

इन नव-नियुक्त कर्मचारियों के जुड़ने से ट्रेनों के समयबद्ध, सुरक्षित एवं निर्बाध संचालन को और अधिक बल मिलेगा। साथ ही, भविष्य की परिचालन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए यहां मानव संसाधन की संख्या में और वृद्धि करने की योजना भी बनाई जा रही है, जिससे स्टेशन की कार्यक्षमता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया जा सके।

पश्चिम रेलवे आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षित मानव संसाधन तथा प्रभावी परिचालन प्रबंधन के माध्यम से यात्रियों को गुणवत्तापूर्ण सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। जेतलसर जैसे महत्वपूर्ण जंक्शन स्टेशन पर परिचालन स्टाफ की उपलब्धता बढ़ने से न केवल रेलवे की परिचालन क्षमता मजबूत होगी, बल्कि कर्मचारियों को भी बेहतर कार्य वातावरण एवं संसाधन उपलब्ध हो सकेंगे।

भावनगर मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने विश्वास व्यक्त किया कि नव-नियुक्त लोको पायलट एवं सहायक लोको पायलट अपने दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए सुरक्षित, विश्वसनीय एवं यात्री-केंद्रित रेल सेवाएं प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

पश्चिम रेलवे यात्रियों की सुविधा, संरक्षा एवं उत्कृष्ट रेल सेवाओं के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को निरंतर सशक्त करते हुए भविष्य में भी विकासोन्मुख एवं जनहितकारी पहलें जारी रखेगा।

सूरत नासिरनगर विध्वंस विवाद : 150 से अधिक मकानों के विध्वंस के खिलाफ उच्च न्यायालय में स्थगन याचिका दायर, कार्रवाई की मांग

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। एक सप्ताह पहले, वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों और नगर निगम के अधिकारियों की मौजूदगी में वेड दरवाजा जिलानी पुल के पास नासी नगर में घरों को गिराने का काम सुबह से शुरू हुआ। बिना किसी पूर्व सूचना के लगभग 150 से 200 घरों पर बुलडोजर चलाए जाने के बाद भारी हंगामा हुआ।

50 वर्षों से अधिक समय से वहां रह रहे परिवार रातोंरात बेघर हो गए, जिससे नासिर नगर के निवासी भी आक्रोशित हो गए। अंततः, विध्वंस की घटना ने भारी विवाद खड़ा कर दिया और नगर निगम के अधिकारी घबरा गए। इस विध्वंस को लेकर पूरा विवाद उच्च न्यायालय तक पहुंच गया, पता नहीं इसके पीछे कौन सा पक्ष था?

इस घटना के बाद, शेष मकान मालिकों ने, जो अब अन्य मकान मालिकों को काल्पनिक भय से डरा रहे हैं, उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया है। संपत्ति मालिकों ने नासिर नगर में शेष मकानों के विध्वंस पर रोक लगाने के लिए एक आवेदन दायर किया है।

दूसरी ओर, नगर निगम के अंदरूनी हलकों में चल रही चर्चा के अनुसार, नगर निगम के अधिकारी, पुलिस अधिकारी और बिल्डर इस पूरे मामले के केंद्र में होने के बावजूद, उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई है, और आने वाले दिनों में बुलडोजर का आतंक मकान मालिकों को सता रहा है। उन्हें डर है कि बुलडोजर नासिर नगर के बचे हुए घरों में भी वापस आ जाएगा। बुलडोजर को बचे हुए घरों में वापस आने से रोकने के लिए स्टे ऑर्डर दाखिल किया गया है।

यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि विवादित विध्वंस के दौरान कैमरे में कैद हुए अधिकारियों की मौजूदगी के बावजूद, कुछ समझ से परे कारणों से, अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाय, शासक इस विवाद को दबाने का खेल खेल रहे हैं। यह कितना खेदजनक है!

नासिरनगर में गुपचुप तरीके से घरों को गिराए जाने के 10 दिन बीत जाने के बावजूद, न तो सूरत नगर निगम और न ही वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का दौरा करना उचित समझा है। सूरत नगर निगम ने कोई वैकल्पिक व्यवस्था भी नहीं की है। चूंकि यह विध्वंस बिना पूर्व अनुमति के हुआ है, इसलिए विकास उपभोक्ता संरक्षण और अनुसंधान केंद्र इस कार्य में शामिल सभी कर्मचारियों, अधिकारियों और पुलिस कर्मियों/कर्मचारियों के खिलाफ तत्काल कार्रवाई की मांग करता है। नासिरनगर में किसी भी कर्मचारी/अधिकारी द्वारा अपने पद का दुरुपयोग करके 150-200 घरों को गुपचुप तरीके से गिराए जाने जैसी घटना को रोकने के लिए, विकास उपभोक्ता संरक्षण और अनुसंधान केंद्र ने 09/06/2026 को सूरत कलेक्टर, सूरत नगर आयुक्त और सूरत पुलिस आयुक्त को लिखित शिकायत दर्ज कराई है कि नगर निगम के वरिष्ठ अधिकारियों और वरिष्ठ पुलिस अधिकारियों/कर्मचारियों को तत्काल निलंबित किया जाए और बेघर हुए नासिरनगर के लोगों के लिए वैकल्पिक व्यवस्था की जाए।

इफको अध्यक्ष दिलीप संघाणी ने आज नई दिल्ली में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान से शिष्टाचार भेंट की

कृषि एवं ग्रामीण विकास के क्षेत्र में मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के दूरदर्शी नेतृत्व, किसानों के कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता सराहनीय है : दिलीप संघाणी

अमेरिका प्रवास के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, उच्चस्तरीय बैठकों तथा कृषि एवं सहकारिता क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण अनुभवों एवं निष्कर्षों की जानकारी साझा की : दिलीप संघाणी

इस अवसर पर हाल ही में सम्पन्न अमेरिका प्रवास के दौरान आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों, उच्चस्तरीय बैठकों तथा कृषि एवं सहकारिता क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण अनुभवों एवं निष्कर्षों की जानकारी साझा की गई। प्रतिनिधिमंडल द्वारा अमेरिका में कृषि नवाचार, सहकारी मॉडल, कृषि-व्यवसाय, तकनीकी हस्तांतरण तथा किसान-केंद्रित पहलों से जुड़े विषयों पर हुई चर्चाओं के प्रमुख बिंदुओं से मंत्री महोदय को अवगत कराया गया।

बैठक के दौरान भारत और अमेरिका के बीच कृषि, सहकारिता, कृषि-व्यवसाय, खाद्य सुरक्षा, कृषि प्रौद्योगिकी तथा किसान

सशक्तिकरण के क्षेत्रों में संभावित सहयोग और साझेदारी की संभावनाओं पर सार्थक चर्चा हुई। दोनों देशों के बीच ज्ञान, तकनीक और सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान को और अधिक सुदृढ़ बनाने पर विशेष बल दिया गया।

श्री संघाणी ने कृषि एवं ग्रामीण विकास के क्षेत्र में मंत्री श्री चौहान के दूरदर्शी नेतृत्व, किसानों के कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा कृषि क्षेत्र में नवाचार और सुधारों को प्रोत्साहित करने हेतु किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि उनके नेतृत्व में भारत का कृषि एवं सहकारिता क्षेत्र नई ऊंचाइयों को प्राप्त करेगा तथा किसानों की आय, उत्पादकता एवं समृद्धि बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल होंगी।

यह भेंट भारत के कृषि एवं सहकारिता क्षेत्र को वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं से जोड़ने तथा किसानों के हित में अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में देखी जा रही है।

राजस्थानी समाज के परिवारों के आरोप: महिलाओं और लड़कियों के मामलों और संपत्ति विवादों में न्याय के लिए पुलिस-अदालत का दबाव

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। गुजरात के विभिन्न शहरों में वर्षों से रह रहे और गुजरात में जन्मे राजस्थानी समुदाय के परिवार आज विभिन्न व्यवसायों में लगे हुए हैं और अपने परिवार का भरण-पोषण करने और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। यह राजस्थानी समुदाय मुख्य रूप से वस्त्र, किराना स्टोर, आइसक्रीम, कोल्ड ड्रिंक्स, रेस्तरां, चाय होटल और ब्रांडेड मिठाई के क्षेत्र में अपनी पहचान बना रहा है।

यह स्वाभाविक है कि छोटे-बड़े किराना या आइसक्रीम की दुकानों में परिवार के सदस्य ही ज्यादातर काम करते हैं और दुकान चलाते हैं। इन छोटे-बड़े व्यवसायों में, बच्चों को अच्छी शिक्षा प्रदान करने के लिए शिक्षा का खर्च उठाना पड़ता है, चाहे वह लड़का हो या लड़की, और इस महंगाई भरे माहौल में, बच्चों के खर्चों को पूरा करने के लिए व्यवसाय में कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।

इस समय स्वाभाविक है कि व्यापारी को दुकान छोड़कर सामान खरीदने जाना पड़ता है। उसे दूसरे व्यापारी से पैसे भी लेने जाना पड़ता है। फिर व्यापारी को अपनी पत्नी, बेटे या बेटी को दुकान पर छोड़ना पड़ता है। और इस समय का फायदा उठाते हुए, कुछ आशिक, ऐसी महिलाओं या युवा बेटियों के अकेलेपन का लाभ उठाकर, कुछ न कुछ खरीदने के बहाने बार-बार आते हैं और ऐसी भोली-भाली बेटियों या महिलाओं से संबंध बनाते हैं, और मीठी-मीठी बातों में बहला-फुसलाकर एक दिन उन्हें भगा ले जाते हैं (इसे अपहरण कहते हैं)। और फिर, भले ही कोर्ट मैरिज या शादी के नाम पर बना लिव-इन रिलेशनशिप (दोस्ती का समझौता) पूरी तरह से अवैध हो और दो बच्चों के माता-पिता हों,

कुछ कम अक्ल वाले या कम प्रैक्टिस वाले वकील लड़की या महिला के परिवार को कानूनी नोटिस भेजकर उन्हें कानून के शिकंजे में फंसाकर परेशान करते हैं। इस खेल में ऐसे वकील पुलिस के साथ मिलीभगत करते हैं। कुछ मामलों में, अपहरण की गई लड़की के दो बच्चे हो जाने और दस-बारह साल बीत जाने के बाद, उसके परिवार को दहेज, संपत्ति और व्यापार में हिस्सेदारी की मांग करके परेशान किया जाता है। इसके अलावा, कुछ मामलों में, अपहृत महिला या लड़की को किसी अज्ञात स्थान पर रखा जाता है और परिवार से संपर्क नहीं करने दिया जाता है। उन पर दबाव डालकर या डरा-धमकाकर उन्हें ब्लैकमेल किया जाता है, उनका ब्रेनवॉश किया जाता है और उन्हें परिवार से संपर्क नहीं करने दिया जाता है। इस वजह से, माता-पिता अपने बच्चों को असहाय अवस्था में छोड़ देते हैं। इसके परिणामस्वरूप, ऐसे बच्चों के भविष्य को लेकर प्रश्न उठते हैं,

जैसे कि शिक्षा, संस्कृति और माता-पिता का प्यार, जिसका उनके मानसिक स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। उनका जीवन रेगिस्तान जैसा हो जाता है और उनके भविष्य को लेकर सवाल उठने लगते हैं!

इस तरह, व्यापार में व्यस्त परिवार का मुखिया महंगाई से परेशान है, वहीं दूसरी ओर, तथाकथित साधारण वकील पुलिस की मिलीभगत से विभिन्न कानूनी खामियों का फायदा उठाकर महिलाओं और बेटियों का अपहरण करने वालों को बढ़ावा दे रहे हैं। राजस्थानी समाज, जो एक व्यापारिक समुदाय है, के कई परिवार आज ऐसे वकीलों के पापों के कारण न्याय की उम्मीद में अपने बच्चों के लिए न्याय मांगने के लिए पुलिस थानों की सीढ़ियां चढ़ रहे हैं।

इसके अलावा, ऐसे वकीलों के गुनाहों के कारण ही, काडोदरा जैसे औद्योगिक क्षेत्र में संपत्ति खरीदने के लिए 30 लाख रुपये की बड़ी रकम चुकाई जा चुकी है, विक्रेता के पास पैसे लेने की पुष्टि करने वाले हस्ताक्षर और डायरी भी है, फिर भी पैसा लेने वाला व्यक्ति इसे मानने से इनकार कर रहा है। इस मामले में, आम वकील ऐसे झूठे वकीलों का साथ देते हैं और पुलिस के साथ मिलीभगत करके संपत्ति खरीदार के साथ अन्याय करने के लिए अथक प्रयास करते हैं।

इतना ही नहीं, शिकायतकर्ता द्वारा संपत्ति खरीदने और 30 लाख रुपये की भारी रकम चुकाने के बाद, पुलिस ने एफएसएल को डायरी भेजी, लेकिन पिछले दो वर्षों से एफएसएल रिपोर्ट जमा तक नहीं की है, जो कि ऐसे वकीलों का काम है। जब मेहनती और कारोबारी सोच वाले राजस्थानी समाज को ऐसे वकीलों द्वारा परेशान किया जा रहा है, तो न्याय की उम्मीद किससे की जा सकती है?